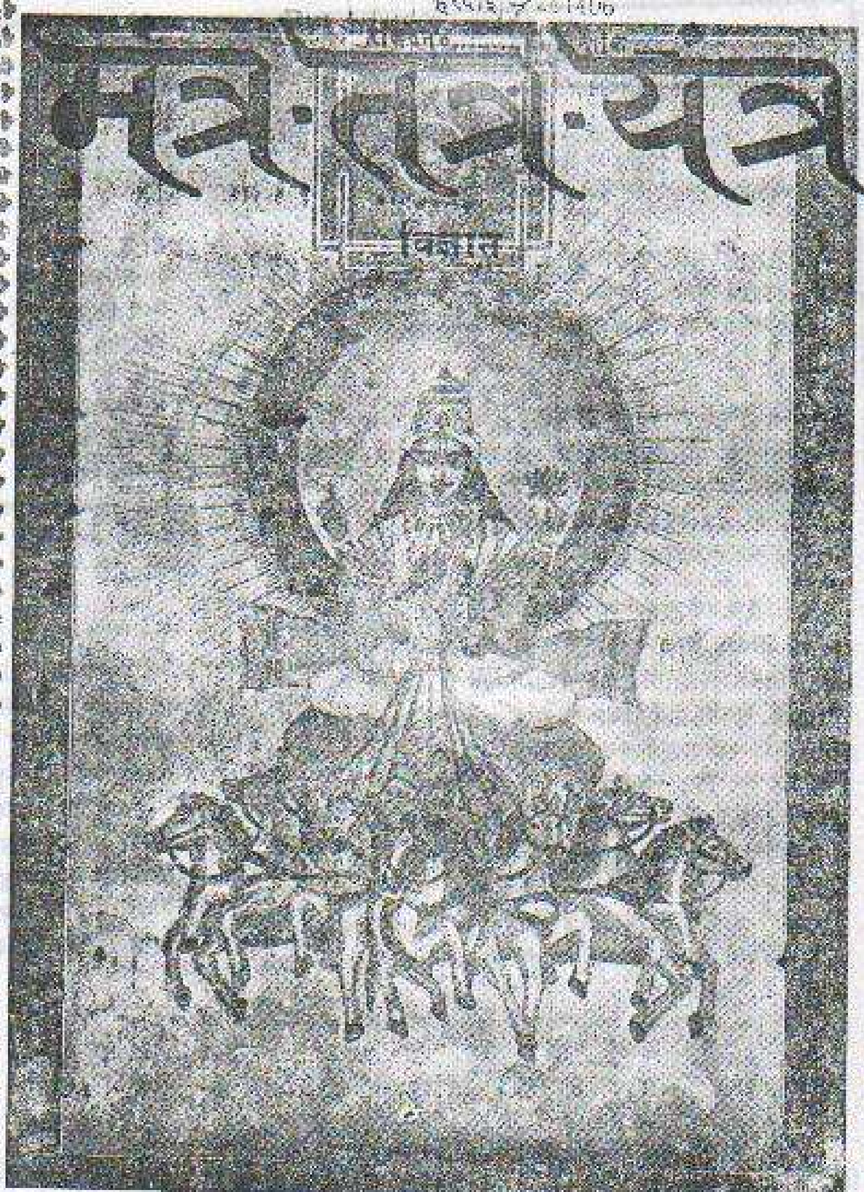


विस०-२०

मकर संक्रान्ति—(१४-१-९१)

संकल्प सिद्धि दिवस

मकर संक्रान्ति के विशेष महत्व के सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा जा सकता है, यह दिवस, सूर्य का वह तेजस्वी दिवस है, जिसमें ग्रह-गति, योग इस प्रकार से बन जाते हैं, कि कोई भी साधक, किसी भी प्रकार का संकल्प ले कर, यदि किसी कार्य का विचार करें, तो उसे निश्चय ही सफलता मिलती है।

मकर संक्रान्ति का तात्पर्य है, सूर्य का मकर राशि में प्रवेश करना, और इस प्रवेश के साथ ही संक्रमण की विभिन्न प्रक्रियाएं प्रारम्भ हो जाती हैं, यह दिवस पाप-नाशक दिवस है, और लोक मान्यताओं में इसके महत्व को विशेष रूप से समझा गया है, इस दिन प्रत्येक आस्थावान व्यक्ति स्नान वगैरह कर सूर्य को अर्घ्य प्रदान करता है, तथा अपनी श्रद्धानुसार तिल-दान, वस्त्र-दान, पात्र-दान इत्यादि सम्पन्न करता है।

इस वर्ष मकर संक्रान्ति का शुभ मुहूर्त सूर्योदय से दिन के १ बज कर ४२ मिनट तक ही है, विशेष साधना काल प्रातः ९ बजकर १८ मिनट से संक्रांति की पूर्णता तक माना गया है, साधक प्रातः अपने नियम के अनुसार स्नान-ध्यान कर ९ बजकर १८ मिनट के पश्चात् अपने पूजा स्थान में सूर्य की ओर, अर्थात् पूर्व दिशा की ओर मुंह कर, अपने सामने बाजोट पर "१२ सूर्य संक्रान्ति चक्र" स्थापित करें, और प्रत्येक सूर्य चक्र पर एक तिल का लड्डू स्थापित करें, अपने सामने स्वास्तिक-कुंकुंम से बना कर उस पर "सूर्य कंकण" अर्थात् सिद्ध सूर्य कड़ा स्थापित करें, अब तांबे के पात्र में जल ले कर सूर्य के परम प्रभावशाली नामों—सविता, प्रभाकर, धर्मध्वज, कालचक्र, अरिहा, कामद, सर्वतोमुख, प्रशान्तात्म, करुणान्वि, तेजपति, अज, दिवान्तासु, प्रजाध्यक्ष, संवर्तक, भानु, से सूर्य का आह्वान करते हुए, प्रत्येक नाम के साथ "नमः" का प्रयोग करें, तथा दाएं हाथ से जल प्रत्येक चक्र के सामने अर्पित करें, इसके साथ ही कुंकुंम तथा लाल पुष्प चढ़ाएं, अब मध्य में स्थित सूर्य कंकण पर २१ बार तिल तथा पुष्प अर्पित करें, प्रत्येक बार सूर्य के मूल मन्त्र का जप करते हुए सूर्य का आह्वान करें,

मूल मन्त्र

॥ ॐ ह्रं खं खखोल्काय नमः ॥

तत्पश्चात् आठ दिशाओं में स्थित देवियों की पूजा करते हुए तिल अर्पित करें, इन देवियों को तिल अर्पित करते समय क्रमशः—**रां दीप्तायै नमः, रीं सूक्ष्मायै नमः, रूं जयायै नमः, रें विभूतये नमः, रैं विमलायै नमः, रों अमोघायै नमः, रौं विद्युतायै नमः, रः भद्रायै नमः** का ध्यान करें, ये आठों देवियां, सूर्य की शक्तियां हैं, और साधक को सूर्य-शक्ति के प्रभाव से अपना गुण-प्रभाव देने में समर्थ हैं।

वर्ष-१०

अंक-१२

दिसम्बर-१९९०

* * * * * * * * * * * * *

卐

मुद्रक प्रकाशक लेखक

एवं

सम्पादक

योगेन्द्र निर्मोही

卐

卐

: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग,

हाईकोर्ट कालोनी,

जोधपुर-३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : ३२२०९

आनो भद्राः क्रतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

।। ॐ नवो नवो भवति जायमानः ।।

हे प्रभु ! आप सर्व शक्तिमान हैं, हम पर कृपा करें, हमारा नया वर्ष उन्नतिदायक, मंगलमय एवं सौभाग्यशाली हो।

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

शाक्त साधना पद्धति से

सौन्दर्योपासना सिद्धि

सबको वश में करने वाली अद्वितीय साधना पद्धति

भारत में तीन तरह की साधना पद्धतियां प्रचलित हैं, जिनमें शैव साधना पद्धति, वैष्णव साधना पद्धति, और शाक्त साधना पद्धति है, इन साधना पद्धतियों में शाक्त साधना पद्धति तुरन्त प्रभाव प्रदान करने वाली और अचूक मानी जाती है, वर्ष का यह महत्वपूर्ण लेख और साधना पद्धति पाठकों और साधकों को देते हुए प्रसन्नता हो रही है कि इस साधना पद्धति से हम किसी भी देवता को अपने वश में कर सकते हैं, या अपने अनुकूल बना सकते हैं, साथ ही साथ इस पद्धति से किसी भी पुरुष या स्त्री को भी पूर्ण रूप से अपने वश में कर सकते हैं, यह अपने आप में अचूक और तुरन्त प्रभावी उपाय है।

इसके साथ ही साथ यह "सौन्दर्योपासना सिद्धि प्रयोग" भी कहलाता है, जिसकी वजह से रोग मुक्ति और शरीर को अद्वितीय सौन्दर्य-युक्त बनाने में यह साधना पद्धति अपने आप में अचूक है।

सौन्दर्योपासना सिद्धि के बारे में प्राचीनतम ग्रंथों में तो उल्लेख मिलता ही है, कई स्थानों पर स्पष्ट रूप से वर्णित हुआ है, कि यदि साधक किसी देवता की साधना करना चाहता है, या किसी भी देवता को अपने अनुकूल बनाना चाहता है, उसे प्रसन्न करना चाहता है या उसके प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहता है, तो साधना प्रारम्भ करने से पूर्व यह सौन्दर्योपासना सिद्धि सम्पन्न कर लेनी चाहिए।

जहां धार्मिक ग्रन्थों में और उपासना ग्रन्थों में इस पद्धति को उपयोगी और महत्वपूर्ण बताया है वहीं तांत्रिक ग्रंथों में भी इस पद्धति को जीवन के लिए आवश्यक और अनुकूल स्पष्ट किया है, स्वयं गुरु गोरखनाथ ने इस सौन्दर्योपासना सिद्धि प्रयोग के बारे में समझाते हुए इसके मुख्यतः छः लाभ बताये हैं, जो कि उन्होंने अनुभव किये, या जिसे प्रत्यक्ष कर उन्होंने स्वीकार किया, कि इस साधना पद्धति से इस प्रकार के लाभ तुरन्त प्राप्त होते हैं।

१- सौन्दर्योपासना सिद्धि से किसी भी देवी-देवता को पूर्णतः अपने अनुकूल बना सकते हैं, और उनके प्रत्यक्ष दर्शन और उनसे संबन्धित सिद्धि प्राप्त करने में यह साधना-पद्धति अपने आप में अचूक और महत्वपूर्ण है।

फिर भले ही वह देवी या देवता क्रूर हो या शान्त हो, चाहे वह हो या दस महाविद्या साधना हो, चाहे भैरव उपासना हो या लक्ष्मी सिद्धि हो, इन सभी में यह प्रयोग तुरन्त फलप्रद होता है।

२- इस साधना से संसार के किसी भी पुरुष या स्त्री को सम्मोहित किया जा सकता है, उस पर वशीकरण प्रयोग किया जा सकता है, उसे अपने वश में किया जा सकता है, जिससे वह जीवन में हमारे अनुकूल कार्य करे, या हम अपने जीवन में उसे जो भी आज्ञा दें– उसका पूरा पूरा पालन करे।

यदि कोई रूठा हुआ हो या दूर रहता हो, अथवा मतभेद हो गये हों या हमारा अधिकारी हो, अथवा कोई ऐसा व्यक्ति– जो हमारा कार्य सम्पन्न नहीं कर रहा हो, तो उसे अपने अनुकूल बनाने के लिए भी यह प्रयोग अपने आपमें महत्वपूर्ण है।

३- दाम्पत्य जीवन में मधुरता लाने के लिए, पुत्र की उन्नति अथवा पुत्र प्राप्ति के लिए, सौभाग्य प्राप्ति के लिए पति की दीर्घायु के लिए, सुन्दर पति या पत्नी की प्राप्ति के लिए, अथवा इच्छानुसार व्यक्ति से विवाह करने के लिए यह प्रयोग अपने आप में महत्वपूर्ण माना गया है।

४- यह प्रयोग रोग निवारण प्रयोग है, इससे किसी भी प्रकार का रोग दूर किया जा सकता है, और व्यक्ति पूर्णतः स्वस्थ, सुन्दर और आकर्षक बन सकता है, सही अर्थों में देखा जाय तो भूत-प्रेत, पिशाच-बाधा अथवा ग्रह-बाधा जैसी समस्याओं का समाधान इस प्रयोग से तुरन्त सम्पन्न होता है, और सफलता प्राप्त होती है।

५- मूलतः यह सौन्दर्योपासना पद्धति है, यदि शरीर अनाकर्षक, मोटा और भारी हो, अथवा शरीर में सौन्दर्य की कमी हो, और जो अपने शरीर को सुन्दर और आकर्षक बनाये रखना चाहते हों– उनके लिए तो यह प्रयोग रामबाण की तरह है, कोई भी पुरुष या स्त्री इस प्रयोग को सम्पन्न कर अपने जीवन में मनोवांछित सुन्दरता प्राप्त कर सकते हैं।

६- यह लक्ष्मी उपासना प्रयोग माना गया है, इसके माध्यम से लक्ष्मी को पूर्णतः प्रसन्न कर व्यापार में अनुकूलता लायी जा सकती है, प्रमोशन या आर्थिक उन्नति प्राप्त की जा सकती है, साथ ही साथ इस प्रयोग से शत्रुओं की समाप्ति और मुकदमे में विजय प्राप्त कर सकते हैं।

मेरी राय में आपको इस प्रकार का प्रयोग एक बार अवश्य ही सम्पन्न करना ही चाहिए, क्योंकि इस प्रयोग का प्रभाव अपने आपमें अचूक और तुरन्त होता है।

यह प्रयोग तीन दिन का प्रयोग है, और किसी भी शुक्रवार से प्रयोग प्रारम्भ कर रविवार तक इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है, यह प्रयोग दिन को या रात्रि को कभी भी सम्पन्न कर सकते हैं, चाहे साधक किसी भी धर्म का उपासक हो, चाहे वह किसी मत का मानने वाला हो– यह प्रयोग सभी के लिए समान रूप से उपयोगी है।

इस प्रयोग के लिए तीन वस्तुओं की आवश्यकता होती है, जिसमें १- **सौन्दर्योपासना दुर्लभ यंत्र, २- सौन्दर्य माला, ३- वैजयन्ती सिद्धि गुटिका** की आवश्यकता होती है, तांत्रिक ग्रंथों में भी इसी प्रकार की सामग्री के प्रयोग की सलाह दी गयी है।

इसे सौन्दर्योपासना पैकेट **कहा गया है, और रियायती मूल्य पर इसकी न्यौछावर मात्र १५०) रु० रखी गयी है, अग्रिम धनराशि भेजने की आवश्यकता नहीं है, आप पत्र द्वारा सूचित कर दें, तब आपको वी०पी० से यह सामग्री भिजवायी जा सकती है।**

इसके लिए शास्त्रों में बताया गया है, कि नूतन चन्द्र दर्शन से प्रयोग प्रारम्भ करना चाहिए, यानी अमावस्या के बाद जब नया चांद उगे–उस दिन यह प्रयोग प्रारम्भ होना चाहिए, प्रत्येक अमावस्या के बाद द्वितीया को नया चांद उगता है, तदनुसार यह प्रयोग १७-१-९१ से १९-१-९१ तक सम्पन्न किया जा सकता है, नूतन चन्द्र मुहूर्त में शुक्रवार आवश्यक नहीं होता, पर ये तीन दिन इस

साधना के लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण व सिद्धिदायक माने गये हैं, और प्रत्येक साधक को इन तीन दिनों का उपयोग करना चाहिए।

साधक सामान्य रूप से दीपक जलाकर इससे संबंधित मन्त्र जप प्रारम्भ कर सकता है, अथवा यदि किसी विशेष देवता की सिद्धि प्राप्त करना चाहे तो उसका चित्र सामने रख कर यह प्रयोग सम्पन्न कर सकता है, उदाहरण के लिए यदि कोई साधक 'लक्ष्मी प्रत्यक्ष सिद्धि' प्राप्त करना चाहे तो अपने सामने लक्ष्मी का चित्र रख कर यह प्रयोग सम्पन्न कर सकता है, इसी प्रकार यदि कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका को, या कोई प्रेमिका अपने प्रेमी को अपने वश में करना चाहे—तो उसका चित्र सामने रख कर मन्त्र जप हो सकता है।

इसके अलावा रोग मुक्ति आदि कार्यों में मात्र हाथ में जल लेकर साधक यह बोले, कि मैं अमुक कार्य की सिद्धि के लिए यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहता हूं, और फिर सामने तेल का दीपक लगा दे और मन्त्र जप प्रारम्भ कर दें, यह साधना दिन को या रात्रि को सम्पन्न की जा सकती है।

तांत्रिक ग्रन्थों में तो यह लिखा हुआ है कि प्रत्येक महीने नवीन चन्द्र दर्शन के अवसर पर इससे संबंधित प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए, इस प्रकार १२ महीनों में १२ बार अपने कार्य अनुकूल बना सकते हैं, यह बात निश्चित है कि इस प्रकार के प्रयोग से किसी प्रकार की हानि नहीं होती, और पूर्णत: अनुकूलता प्राप्त होती है।

साधना में किसी भी प्रकार के वस्त्र धारण किये जा सकते हैं, पर पुरुष तो धोती पहिने और स्त्री साधिका साड़ी धारण करें, सिले-सिलाये वस्त्र धारण नहीं किये जा सकते।

इसके बाद किसी थाली में कुंकुंम से निम्न प्रकार का यन्त्र बना लें, इसे सौन्दर्योपासना यन्त्र कहते हैं—

सौन्दर्योपासना यंत्र

१	४
३	६

इस यन्त्र पर पैकेट में जो मन्त्र प्राप्त हुआ है—वह रख दें, और साथ ही साथ वैजयन्ती सिद्धि गुटिका भी रख दें, फिर सौन्दर्य माला से मन्त्र जप प्रारम्भ करें, नित्य ३१ माला मन्त्र जप आवश्यक माना गया है।

सौन्दर्योपासना मन्त्र

॥ ॐ ऐं ऐं सौन्दर्य प्रत्यक्ष वशं सम्मोहय फट् ॥

तीन दिन तक यह मन्त्र जप करें, मन्त्र जप में यदि चित्र हो तो सामने रख कर उसे देखता हुआ मन्त्र जप सम्पन्न करें, साधना सम्पन्न होने पर इस सामग्री को लाल कपड़े में बांध कर घर में किसी स्थान पर रख दें।

नोट- सौन्दर्योपासना पैकेट बहुत कम तैयार हो पाये हैं, अत: केवल पत्रिका सदस्यों को ही इस रियायती मूल्य पर पैकेट दिया जा सकता है, अत: पैकेट मंगाते समय आप अपनी सदस्यता संख्या अवश्य लिखें, जो १९९१ के लिए पत्रिका सदस्य नहीं है, उन्हें यह पैकेट नहीं भेजा जा सकता, पहले वर्ष ९१ की सदस्यता प्राप्त करें, और बाद में ही यह पैकेट मंगाएं।

प्रपत्र

मैं सौन्दर्योपासना पैकेट प्राप्त करना चाहता हूं, मैं १९९१ का पत्रिका सदस्य हूं, इसलिए यह पैकेट प्राप्त करने का अधिकारी हूं, कृपया मुझे वी०पी० से यह पैकेट भेज दें।

मेरी सदस्यता संख्या ....

मेरा नाम ....

मेरा पूरा पता ....

....

....

वसन्त पंचमी (२१-१-९१) के अवसर पर

तिब्बती लामा साधना

का

अद्भुत आश्चर्यजनक अप्सरा सिद्धि प्रयोग

स्वयंवरा अप्सरा साधना

सन् १९९१ के प्रारम्भ, में नववर्ष के अवसर पर एक अद्भुत और आश्चर्यजनक, गोपनीय और दुर्लभ, तिब्बती लामा साधना प्रयोग दिया जा रहा है— जो कि पूर्ण सिद्धिदायक और आश्चर्यजनक रूप से प्रभाव-युक्त है।

तिब्बत के लामाओं ने जिन मन्त्रों और साधना विधियों से साधनाएं सम्पन्न की हैं, वे आज के युग में तो अचूक हैं, और निश्चय ही सिद्धि प्रदायक हैं, वसन्त पंचमी के अवसर पर ही यह प्रयोग सम्पन्न होता है, और इसीलिए इस महत्वपूर्ण अवसर पर अत्यन्त दुर्लभ प्रयोग पत्रिका के माध्यम से पत्रिका सदस्यों को प्रस्तुत किया जा रहा है।

यों तो भारतीय साधना ग्रन्थों और तिब्बती लामा ग्रन्थों में १०८ अप्सराओं का विवरण-वर्णन मिलता है, और पिछले तीन-चार वर्षों से हमने पत्रिका के माध्यम से कई अप्सरा साधनाएं दीं, और हमें प्रसन्नता है कि साधकों ने इन प्रयोगों को सम्पन्न कर सफलताएं प्राप्त कीं, आज के युग में भी इन सफलताओं को प्राप्त कर उन्होंने यह अनुभव किया कि मन्त्र और तन्त्र आज भी जीवित प्रामाणिक और सत्य है, आवश्यकता इस बात की है कि मनोयोग पूर्वक तथा पूर्ण विश्वास के साथ इन साधनाओं को सम्पन्न करें, और जीवन में सिद्धि प्राप्त

कर उन सिद्धियों को प्राप्त करें, जो कि अत्यन्त महत्वपूर्ण और जीवन में पूर्णता प्रदान करने में समर्थ हैं।

अप्सरा साधना जीवन का एक आवश्यक कर्तव्य और साधना पद्धति है, जहां उच्चकोटि के देवताओं ने इन साधनाओं को सम्पन्न किया, वहीं वशिष्ठ, विश्वामित्र जैसे योगियों ने भी, ऋषियों और महर्षियों ने भी इस प्रकार की साधनाएं सम्पन्न कर यह प्रमाणित किया कि मानव जीवन में अप्सरा साधना आवश्यक और जरूरी है।

अप्सरा-साधना आवश्यक और जरूरी इसलिए है कि ऐसी साधना सरल होती है, प्रामाणिक होती है, और शीघ्र सिद्धिदायक होती है, इसके साथ ही साथ इस प्रकार की साधना करने से जहां अप्सरा प्रत्यक्ष प्रकट होती है, वहीं वह जीवन में धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा और ऐश्वर्य देने में पूर्ण रूप से सहायक होती है, वह मानव जीवन में सखा, सहचरी, प्रेमिका, सलाहकार, प्रसन्नता प्रदान करने वाली, और पूर्ण रूप से काया कल्प प्रदान करने वाली अप्सरा होती है, जिसके माध्यम से मानव अपने जीवन में वह सब कुछ प्राप्त करने में सफल हो पाता है, जो उसके जीवन की आकांक्षा होती है।

पुरुष साधकों के लिए जहां इस प्रकार की साधना को महत्वपूर्ण और उपयोगी माना है, वहीं स्त्री साधकों के लिए भी इस प्रकार की अप्सरा मित्र, सहेली, मार्गदर्शिका और यौवन प्रदान करने वाली देवी है, जो पूर्ण सौभाग्य, ऐश्वर्य, और सुख प्रदान करने में समर्थ है, वास्तव में ही अप्सरा साधना जीवन का सौभाग्य माना गया है।

भारत की अपेक्षा भी तिब्बत में उच्चकोटि की साधनाएं बराबर उन्नति की ओर अग्रसर होती हैं, तिब्बत के लामा तो साधनाओं के क्षेत्र में पूरे विश्व में [illegible] माने जाते हैं, उन्होंने अपने आपको प्रचार-प्रसार से दूर रखा, और एकान्त में बैठ कर उन साधनाओं और सिद्धियों को प्राप्त किया, जिनको दुर्लभ माना गया था, वायुगमन, एक स्थान से दूसरे स्थान से दूसरे स्थान पर सशरीर कुछ ही क्षणों में चले जाना, काया कल्प आदि कई साधनाएं ऐसी हैं जो यद्यपि दुर्लभ मानी गई हैं, पर तिब्बती लामाओं ने सर्वथा नवीन पद्धतियों से इन साधनाओं को सम्पन्न किया, और यह दिखा दिया कि इस प्रकार की साधना पद्धति से ही सफलता पाई जा सकती है।

वर्तमान में भी तिब्बत के कई लामा इन सिद्धियों में अग्रगण्य हैं, यद्यपि तिब्बत पर दमन चक्र चल रहा है, और इनके मठों को ध्वस्त कर दिया गया है, फिर भी हिमालय के सुदूर क्षेत्रों में लामाओं ने बैठ कर इन सिद्धियों को जीवित, जाग्रत और चैतन्य बनाये रखा है, हमें सौभाग्य है कि इनमें से कई लामाओं से हमें भेंट हुई और उनकी सेवा करने से, उनके चरणों में बैठने से इस प्रकार की सिद्धियां प्राप्त हो सकीं।

मेरे पिता जी अत्यन्त गरीब थे, और हमने अपना बचपन घोर गरीबी में ही बिताया है, मुझे अच्छी तरह से याद है कि हम पांचों भाई-बहिन एक-एक दाने के लिए मोहताज रहे हैं, ऐसी स्थिति में मेरे पिता जी संसार से लगभग उदासीन हो गये थे, और वे अधिकतर साधु-सन्तों, सन्यासियों की सेवा में रहने लगे, कई-कई दिन तक तो घर पर भी नहीं आते थे।

इन्हीं दिनों कौसानी के आगे एक स्थान पर मेरे पिता जी को कोई तिब्बती लामा मिल गये, जो विचरण करते हुए उधर आ निकले थे, अपने स्वभाव के अनुसार मेरे पिता जी उनकी सेवा में लगे रहे, और लगभग साढ़े पांच महीने तक उनके साथ रहे, उनकी सेवा की और बदले में किसी प्रकार की कोई याचना या इच्छा प्रकट नहीं की, परन्तु एक दिन वे लामा अपने मूड में थे और उन्होंने कुरेद कर मेरे पिता जी के परिवार के बारे में जानकारी प्राप्त की, जब उन्हें ज्ञात हुआ कि उनके पांच पुत्र और चार पुत्रियां हैं और वे घोर गरीबी के दिन बिता रहे हैं, जीवन में भरपेट भोजन भी उन्हें नसीब नहीं हुआ है, तो उन्होंने मेरे पिता जी पर प्रसन्न होकर **"स्वयंवरा अप्सरा साधना"** दी, और कहा कि तुम मेरे सामने ही इस साधना को सम्पन्न करो।

उन्होंने जिस तरह से साधना पद्धति बताई थी, उसको मेरे पिताजी ने अपनी डायरी में नोट कर लिया था, मेरे पिताजी की यह आदत थी कि वे प्रत्येक बात डायरी में नोट कर लेते थे।

तिब्बती लामा के अनुसार बसन्त पंचमी से यह साधना प्रारम्भ की जाती है, और पूर्णिमा को इस साधना का समापन कर लिया जाता है, इस वर्ष के अनुसार २१-१-९१ से यह साधना प्रारम्भ कर ३०-१-९१ को साधना का समापन किया जा सकता है।

यह साधना रात्रि को सम्पन्न की जाती है, लामा ने जिस प्रकार से बताया उसका विवरण पिताजी की डायरी में इस प्रकार से अंकित था—

बसन्त पंचमी के दिन मुझे पीली धोती पहिनने को दी और बताया कि मुझे अपने शरीर पर पीली धोती ही ओढ़नी है. बसन्त पंचमी के दिन, रात्रि को एक कमरे में पीले आसन पर- जो कि सूती आसन था, उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बिठा दिया, और सामने कुंकुम से जमीन पर निम्न प्रकार का यंत्र बनाया, यह यंत्र कुंकुम से जमीन पर अपने सामने नित्य बनाया जाता है—

यन्त्र

६	२	८	३
४	७	१	५

इस यंत्र पर तेल का दीपक लगा दिया गया, और सामने **"स्वयंवरा अप्सरा का चित्र"** उन्होंने शून्य से प्राप्त कर रख दिया, फिर अपनी झोली से एक महत्वपूर्ण यंत्र निकाला, जिसे वे **"स्वयंवरा अप्सरा यन्त्र"** कहते थे।

उन्होंने वह यंत्र मुझे दे दिया, जिसे मैंने दीपक के पास ही चित्र के सामने एक पात्र में रख दिया, फिर विशिष्ट माला से मुझे मंत्र जपने के लिए कहा मुझे यह कहा गया कि तुम्हें एक रात में ३५ माला मन्त्र जप करना है।

यह माला विशिष्ट मनकों से गुंथी हुई थी, उन्होंने इसे **"स्वयंवरा अप्सरा माला"** बताया था, इस माला से मैंने मंत्र जप प्रारम्भ किया, उन्होंने जो मंत्र बताया था, वह इस प्रकार है—

मन्त्र

।। ॐ ह्रीं ऐं स्वयंवरायै आगच्छ ह्रीं ऐं ।।

मैं मनोयोग पूर्वक उस मंत्र को करता रहा, पहले तीन दिन तो कोई अनुभूति नहीं हुई पर पांचवे दिन रात्रि को घुंघरुओं की तेज आवाज सुनाई दी- जैसे कि उस कमरे में कोई स्त्री नाच रही हो, मैंने जब दूसरे दिन अपने गुरु लामा को यह बात बताई तो उन्होंने कहा तुम सही कर रहे हो, इसी प्रकार मंत्र जप करते रहो, सातवें दिन कमरे में तेज सुगन्ध का **झोंका आया, और ऐसा लगा कि** जैसे कोई अद्वितीय **सुन्दरी मेरे पास आकर बैठ गयी हो, पर वह दिखाई नहीं दी।**

पर इसके अगले दिन ही जब मैं रात्रि में मंत्र जप कर रहा था तो अद्वितीय सौन्दर्यमयी अप्सरा मेरे घुटने से घुटना सटा कर पास में बैठ गयी, सामने दीपक जल रहा था, और मैं बराबर मंत्र जप कर रहा था।

मैंने दूसरे दिन अपने गुरुजी को कहा तो उन्होंने कहा कि पूर्णिमा की रात्रि को जब वह आवे तो उसका दाहिना हाथ अपने हाथ में पकड़ लेना, और वह तुम्हें इच्छा व्यक्त करने के लिए कहे तो यह कह देना कि तुम जीवन भर मेरे साथ प्रत्यक्ष रूप में सशरीर रहोगी, और निरन्तर धन, वस्त्र, आभूषण प्रदान करती रहोगी, तुम्हें प्रेमिका रूप में मेरे साथ रहना है, और मैं जो भी और जिस प्रकार की भी वासना करूं, तुम्हें पूरा करना है।

इसके बाद वह नित्य कमरे में आती रही, पर मैं उससे बोला नहीं, पूर्णिमा की रात्रि को जब मैंने लपक कर उसका हाथ अपने हाथ में लेकर जैसा गुरुजी ने कहा था उस प्रकार से कहा तो वह दो क्षण मुझे देखती रही, और फिर वचन दिया कि जैसा तुम चाहते हो वैसा ही होगा।

मैं उठ गया, दूसरे दिन गुरुजी ने मुझे घर जाने के लिए कह दिया, जब मैं अपने घर पहुंचा तो मेरा शरीर अत्यधिक आकर्षक बन गया था, बाद में नित्य मेरे सिर-हाने तकिये के नीचे स्वर्ण और धन पड़ा हुआ मिलता।

यह डायरी तो मुझे बहुत बाद में मिली, पर मैंने यह अनुभव किया कि हमारे घर में समृद्धि जरूरत से ज्यादा आ गई है, एक प्रकार से हम लखपति, करोड़पति हो चुके थे, पिता जी ने अपने जीवन काल में ही हम सब भाइयों के लिए फैक्टरियां और आलीशान मकान बनवा दिये, हम जब भी, जो भी याचना करते—वह पिता जी तुरन्त पूरी करते, मैंने अपने जीवन में नौकर-चाकर, भोग-विलास, ऐश्वर्य एवं समृद्धि का भी जीवन देखा है, जो पिता जी ने मुझे और हम भाइयों को प्रदान किया था, मैं खुद आश्चर्यचकित था कि यह सब कैसे हुआ, पर पिता जी ने हमें कभी नहीं बताया, वे ६० वर्ष की पूरी आयु प्राप्त कर स्वर्गवासी हुए।

अभी कुछ वर्षों पहले जब उनकी डायरी, उनके कागजों में मिली–तो यह प्रयोग मुझे मिला और मैंने स्वयं आजमाने के लिए यह प्रयोग सम्पन्न किया, तो यह देख कर मैं दंग रह गया कि वर्तमान समय में भी यह प्रयोग अचूक और अद्वितीय है, आज भी प्रेमिका रूप में स्वयंवरा निरन्तर मेरे साथ रहती है, और जब भी मैंने धन, द्रव्य, रुपये-पैसे, वस्त्र आदि की इच्छा प्रकट की, तो स्वयंवरा ने मुझे प्रदान किया।

पिताजी की डायरी में ही स्वयंवरा अप्सरा यन्त्र सिद्ध करने की विधि दी हुई थी, उसी प्रकार से मैंने यन्त्र सिद्ध कर प्रयोग किया था, और मुझे पहली ही बार में सफलता मिल गई।

मैंने साधकों को साधना में विश्वास जताने के लिए के लिए यह दुर्लभ प्रयोग दिया है, और मुझे विश्वास है, कि मेरे अन्य गुरु भाई-बहिन भी इस बसन्त पंचमी के अवसर पर इस प्रयोग को सिद्ध कर सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

कार्यालय टिप्पणी

जिस व्यक्ति ने यह प्रयोग हमें भेजा है, हमने जांच कर यह अनुभव किया है कि वास्तव में ही उनके सिर-हाने नित्य प्रातःकाल वे जितनी भी इच्छा करते हैं, उतना द्रव्य उन्हें प्राप्त हो जाता है, उन्होंने अपना नाम गुप्त रखने के लिए कहा है, इसीलिए हम उनका नाम पता प्रकाशित नहीं कर रहे हैं।

हमारे अनुरोध पर उन्होंने स्वयंवरा अप्सरा महायंत्र सिद्ध करके हमें देने का आश्वासन दिया है, और बहुत कम ही इस प्रकार के यंत्र तैयार हो पाये हैं, जो भी साधक इस प्रकार का दुर्लभ यंत्र चाहें, तो वे स्वयं तो पत्रिका सदस्य हों, और मात्र १५०) रु० की वी.पी. से यह दुर्लभ स्वयंवरा अप्सरा महा यंत्र, स्वयंवरा अप्सरा माला और चित्र प्राप्त कर सकते हैं, वे निम्न प्रकार का प्रपत्र भर कर भेज दें, या सीधा पत्र लिख दें तो हम हम उन्हें १५०) रु. की वी.पी. से इससे संबंधित पैकेट भिजवा देंगे, अग्रिम धनराशि भेजने की जरूरत नहीं है, पत्र लिखते समय यह स्पष्ट रूप से उल्लिखित हो कि वह सन् १९९१ के लिए पत्रिका सदस्य है, अपनी सदस्यता संख्या अवश्य लिखें तभी हम यह पैकेट इस रियायती दर पर भेज सकेंगे, जो सन् १९९१ के लिए पत्रिका सदस्य नहीं होगा, उसे हम यह महायंत्र नहीं भेज सकेंगे।

प्रपत्र

मैं १९९१ के लिए पत्रिका सदस्य हूं, और मेरी पत्रिका सदस्यता संख्या .... है, इसलिए मैं रियायती दर पर 'स्वयंवरा अप्सरा पैकेट' प्राप्त करने का अधिकारी हूं, कृपया मुझे १५०) रु० तथा डाक-व्यय लगा कर उपरोक्त पैकेट भिजवा दें।

मेरा नाम..

मेरा पूरा पता..

....

आप इस प्रपत्र को कागज पर अंकित कर हमें सूचना दे दें, या पत्र लिख दें, हम आपको यह पैकेट भिजवा देंगे, पर इस प्रकार के यन्त्र बहुत ही कम हैं, इसलिए जितनी जल्दी आपका पत्र आयेगा, तभी यन्त्र रहते हुए आपको यन्त्र भेजने की व्यवस्था हो सकेगी।

सूर्य साधना

से

सप्त सिद्धियां

सूर्य के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती, सूर्य ही वह परम तत्व है, जो कि संसार के समस्त तेज, दीप्ति और कान्ति के निर्माता तथा इस जगत की आत्मा कहे गये हैं, सूर्य ही वह विराट पुरुष, आदि देव हैं, जिनकी साधना-उपासना से समस्त रोग, नेत्र-दोष और ग्रह-बाधा दूर होती है, क्योंकि सूर्य ही अपनी शक्ति न केवल पृथ्वी को अपितु चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि आदि को उचित मात्रा में प्रदान कर इस सृष्टि का संचालन करते हैं।

सूर्य के सम्बन्ध में "शिव पुराण" में लिखा है, कि–

आदित्यं च शिवं विद्याच्छिवमादित्यरूपिणम् ।
उभयोरन्तरं नास्ति ह्यादित्यस्य शिवस्य च ॥
एष ब्रह्मा च विष्णुश्च रुद्र एव हि भास्करः ।
त्रिमूर्त्यात्मा त्रिवेदात्मा सर्वदेवमयो रविः ॥

अर्थात् सूर्य एवं शिव में कोई भेद ही नहीं है, और ब्रह्मा, विष्णु व रुद्र, सूर्य के ही अभिन्न अंग स्वरूप हैं, सूर्य में ये तीनों देव स्थित हैं।

वैज्ञानिक रीति-नीति से विवेचन करने पर यह स्पष्ट है, कि यदि किसी पौधे को कुछ दिनों के लिए अन्धकार में - जहां सूर्य का प्रकाश बिल्कुल ही न पहुंचे, वहां रख दिया जाय, तो वह पौधा मृत हो जायगा, यही स्थिति मनुष्य की है, यदि मनुष्य को सूर्य-तत्व निरन्तर प्राप्त न हो तो उसे विभिन्न प्रकार के त्वचा-रोग, नेत्र-रोग, तथा पेट सम्बन्धी बिमारियां हो जाती हैं।

सूर्य के सम्बन्ध में विवेचना करने पर यह स्पष्ट है, कि सूर्य जीवन के सभी रंगों का जनक है, सभी रंग सूर्य किरणों का प्रभाव पा कर ही अपना स्वरूप प्रकट करते हैं, शास्त्रों में कहा गया है कि उदय और अस्त होते हुए सूर्य का ध्यान, आराधना करने वाला व्यक्ति ही ब्राह्मण है, और वह सभी प्रकार का कल्याण-आशीर्वाद प्राप्त करता है।

ज्योतिष और सूर्य

सूर्य ग्रहराज हैं और कभी वक्री नहीं होते, सदैव मार्गी ही रहते हैं, सिंह राशि के स्वामी हैं, और पिता स्वभाव के, क्षत्रिय वर्ण, पिता, व्यक्तित्व, तेज, प्रभाव, स्वाभिमान के कारक ग्रह है, सूर्य के चन्द्र, मंगल, बृहस्पति मित्र ग्रह तथा शुक्र, शनि शत्रु ग्रह हैं, सूर्य सभी ग्रहों के दोष-प्रभाव का शमन कर सकते हैं, परन्तु शनि, जो कि सूर्य पुत्र माने गये हैं, सूर्य बल को नष्ट करने में समर्थ रहते हैं।

सूर्य उपासना

सूर्य के सम्बन्ध में शास्त्रों में इतना अधिक महत्व एवं साहित्य लिखा है, कि इस छोटे से लेख में वह सब वर्णन सम्भव ही नहीं है, सूर्य प्रत्येक व्यक्ति के तेज, व्यक्तित्व का जनक है, और अपने व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने हेतु अपने जीवन के अर्थ को प्राप्त करने हेतु, अपनी इन्द्रियों को तीव्र प्रभावयुक्त बनाने हेतु, वाणी में ज्ञान देने हेतु, अपने शरीर को रोग-रहित करने हेतु, सूर्य की साधना-उपासना आवश्यक है।

सूर्य ही समस्त जगत का प्रकाशक एवं आत्मा है, उसकी किरणें सभी ज्ञात-अज्ञात पदार्थों में जीवन प्रदान करती रहती हैं, और सभी वनस्पतियां सूर्य के कारण ही मनुष्य के लिए योग्य हैं, इसीलिए सूर्य की उपासना का महत्व है, सूर्य साकार स्वरूप है, जिसे सभी पूजन में सर्व-प्रथम अर्घ्य अर्पित किया जाता है, इसके पश्चात् ही दूसरे देवी-देवताओं का पूजन किया जाता है।

जिस व्यक्ति में सूर्य-तत्व समाप्त हो जाता है वह व्यक्ति इस जीवन में एक व्यक्तित्वहीन कीड़े के समान है, जिसके जीवन का कोई महत्व ही नहीं है, और न ही वह व्यक्ति अपने जीवन में कुछ कर सकता है।

सूर्य में जितनी रोगनाशक शक्ति है, वह संसार के किसी अन्य पदार्थ में है ही नहीं, महान दार्शनिक अरस्तु का कथन है, कि जब तक संसार में सूर्य विद्यमान है, तब तक दवाओं में भटकना व्यर्थ है, क्योंकि सूर्य ही शक्ति, सौन्दर्य और स्वास्थ्य का केन्द्र है।

गायत्री उपासना – सूर्य उपासना

गायत्री उपासना–सूर्य की ही उपासना है, गायत्री मंत्र में हम उस परब्रह्म सूर्य देव को और उनके तेज का ध्यान करते हैं, जो कि हमारी बुद्धि को प्रेरित कर, ध्यान और आनन्द की ओर संचारित करें, इस प्रकार जो गायत्री का साधक है, वह सूर्य का उपासक-साधक है, और नित्य प्रति गायत्री मन्त्र का जप कर, अनुष्ठान कर, उससे अपने जीवन में श्रेष्ठता प्राप्त करने वाले साधकों की संख्या लक्ष-लक्ष है, शंकराचार्य ने "संध्या भाष्य" में गायत्री मंत्र की व्याख्या करते हुए सूर्य का ही वर्णन किया है, कि — "इस सम्पूर्ण जगत की आत्मा सूर्य ही है, और सभी प्राणियों में जीवन-स्वरूप, प्राण-स्वरूप और सुख देने वाले उत्पादक सूर्य ही श्रेष्ठ स्वरूप और तेज प्रदान करने वाले हैं, सूर्य ही बुद्धि और तेज का विकास करते हैं।"

सूर्य पूजा साधना

स्वास्थ्य और तेज के आदि देव सूर्य की साधना-उपासना का न केवल भारतीय साधना साहित्य में अपितु स्वास्थ्य साहित्य में भी विस्तृत वर्णन दिया गया है, योग साधनाओं में तो योग क्रियाओं को करने से पहले सूर्य नमस्कार का वर्णन है, जिसके पीछे मूल भावना यही है, कि रजोगुण, सत्व गुण और तमोगुण स्वरूप सूर्य, आप मेरे अन्दर स्थित हो कर अपना कुछ स्वरूप मुझे दे दें, जिससे मेरे शरीर की सभी इन्द्रियां तेजोमय हो जाय, और इस तेज के प्रभाव के कारण रोग, शोक मुझसे दूर रहें, मेरे न केवल बाहरी नेत्रों की दृष्टि का विकास हो अपितु

भीतरी तेजत्व अर्थात् आन्तरिक तेज भी इतना अधिक विकसित हो जाय कि मेरा सम्पूर्ण व्यक्तित्व ही तेजस्वी हो जाय।

पूजा विधान

सूर्य साधना में लाल रंग का विशेष महत्व है इस साधना में ताम्रपात्र में जल, लाल चन्दन, लाल रंग के पुष्प, विशेष आवश्यक हैं, सूर्य साधना, साधक प्रतिदिन नियमपूर्वक प्रातः कुछ समय के लिए ही करें तो आयु वृद्धि, आरोग्य, तेज, यश, कान्ति, वैभव और सौभाग्य प्राप्त होता है, सूर्य उपासना में सबसे अधिक विशेष बात यह है, कि इससे साधक को जो मानसिक प्रसन्नता और उत्साह प्राप्त होता है उससे प्रतिदिन साधक अपने कार्यों को अत्यन्त जोश के साथ और आत्मविश्वास के साथ सम्पन्न करता है रविवार के दिन साधक, सूर्योदय से पहले ही स्नान कर, शुद्ध लाल रंग के वस्त्र धारण कर, अपने पूजा स्थान में अथवा सूर्य के समक्ष सूर्य यन्त्र को स्थापित कर उस पर रक्त चन्दन, सुपारी तथा लाल पुष्प अर्पित कर, इसके साथ ही गुलाल तथा कुंकुम के साथ-साथ सिन्दूर भी अर्पित करें और अपने सामने सिन्दूर को शुद्ध जल में घोल कर दोनों ओर सूर्य चित्र बनाएं तथा पुष्पांजलि अर्पित करते हुए प्रार्थना करें कि,—

"हे आदित्य ! आप सिन्दूर वर्णीय, तेजस्वी मुखमण्डल, कमलनेत्र-स्वरूप वाले ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र सहित सम्पूर्ण सृष्टि के मूल कारण, आपको इस साधक का नमस्कार, आप मेरे द्वारा अर्पित कुंकुम, पुष्प, एवं सिन्दूरयुक्त जल का अर्घ्य ग्रहण करें।"

इसके साथ ही ताम्र पात्र से जल की धारा को, अपने दोनों हाथों में पात्र लेकर, सूर्य को तीन बार अर्घ्य दें, और इसके पश्चात् मणिमाला से अपने पूजा-स्थान में स्थान ग्रहण कर पूर्व दिशा में सूर्य की ओर मुंह कर पांच माला निम्न सूर्य मन्त्र जप करें—

मन्त्र

।। ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः ।।

यह प्रयोग अत्यन्त कम समय में ही सम्पन्न हो जाता है, और योग्य साधक तो इसे अपने प्रतिदिन के पूजा-विधान का अंग बनाकर सूर्य को प्रतिदिन अर्घ्य अवश्य ही अर्पित करते हैं।

चक्षुष्मती साधना-दिव्य दृष्टि साधना

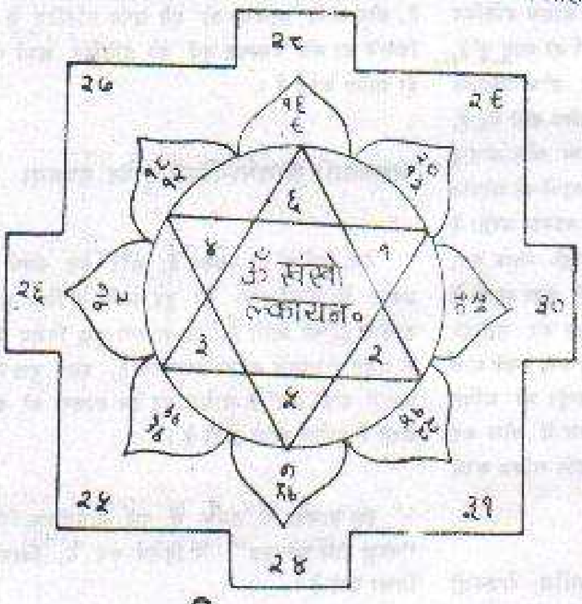
नेत्र, सूर्य के ही स्वरूप हैं, और नेत्र संबंधी सभी प्रकार के रोगों-दोषों को दूर करने के लिये सूर्य की साधना ही की जाती है, यह साधना कुछ विशेष नियमों के अनुसार सम्पन्न करना आवश्यक है, इसके कुछ विशेष मंत्र हैं, उन्हीं मंत्रों के आधार पर इस साधना को सम्पन्न करने से पूर्णता प्राप्त होती है।

इस साधना के संबंध में पूर्ण प्रामाणिक विवरण "परशु राम कल्पसूत्र" में विशेष रूप से, विस्तार से लिखा गया है।

यह साधना रविवार के दिन ही प्रारम्भ की जाती है और नेत्र रोग-बाधा वाले साधक को रविवार के दिन एक समय भोजन (और वह भी बिना नमक के) करना चाहिए, साधक प्रातः ही सूर्योदय से पहले लाल चन्दन सिन्दूर, लाल पुष्प, ताम्र पात्र, लाल वस्त्र **"चक्षुष्मती यंत्र" "मणिमाला" "सूर्य चित्र"** की व्यवस्था कर लें, पूर्व दिशा की ओर मुंह कर सूर्य के सामने यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए, सूर्योदय के समय सूर्य का तेज

प्रारम्भ होता है, उससे पहले ही सामग्री की व्यवस्था कर सूर्योदय के साथ गुरु-ध्यान, पूजन एवं अपने दाएं हाथ में जल ले कर चक्षुष्मती साधना का संकल्प लें —

हे सूर्यदेव ! आप मेरे नेत्रों के तेज रूप में स्थित हो कर मेरी दृष्टि संबंधी सभी दोष दूर करें, मुझे अपना स्वर्ण जैसा तेज प्रदान करें, अन्धकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमृत की ओर ले जांय ।



सूर्य पूजन यन्त्र

अब सर्वप्रथम चक्षुष्मती यन्त्र का पूजन कर उस पर पुष्प एवं रक्त चन्दन अर्पित करें और सूर्य का ध्यान कर जल अर्पित करें, इसके पश्चात् चक्षुष्मती विद्या का पाठ ११ बार सम्पन्न करें, चक्षुष्मती सूर्य की ही शक्ति का स्वरूप है ।

चक्षुष्मती विद्यापाठ

ॐ सूर्यायाक्षितेजसे नमः खेचराय नमः, असतो मा सद्गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय । उष्णो भगवान् शुचिरूपः हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः ।

वयः सुपर्णाउपसेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः ।
अपध्वान्तमूर्णुहि पूर्धिचक्षुमुमुग्ध्य स्मान्निधयेव बद्धान् ॥
पुण्डरीकाक्षाय नमः पुष्करेक्षणाय नमः अमलेक्षणाय नमः ।
कमलेक्षणाय नमः विश्वरूपाय नमः श्रीमहाविष्णवे नमः ॥

प्रत्येक बार पाठ करने के पश्चात् लाल पुष्प से ताम्र-पात्र में रखा हुआ जल अपने नेत्रों में लगाएं, इस प्रकार यह पाठ ग्यारह बार सम्पन्न करें, तत्पश्चात् अपने पूजा-स्थान में पूर्व की ओर मुख कर मणिमाला से पांच माला सूर्य मन्त्र का जप करें, जब तक साधक को अपनी नेत्र-बाधा सम्बन्धी, दृष्टि सम्बन्धी, तेज सम्बन्धी पूर्णता प्राप्त नहीं हो जाय तब तक प्रति रविवार यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए ।

चक्षुष्मती विद्या के चमत्कार एवं इसके सिद्ध होने के उदाहरण एक-दो नहीं हजारों हैं, सूर्य पूजा-साधना से नेत्रों के अलावा व्यक्तित्व को विशेष आत्मबल निमाण, आत्म-विश्वास एवं तेजस्विता प्राप्त होती है ।

निष्कर्ष यह है, कि सूर्य पूजा-साधना से लाभ ही लाभ है, चाहे साधक उसे साधना की दृष्टि से ले, स्वास्थ्य की दृष्टि से ले, वैज्ञानिक दृष्टि से ले अथवा कोई अन्य विचार से, जीवन के कुछ नियम अवश्य होने चाहिए, प्रतिदिन सूर्य-ध्यान, पूजा एवं सूर्य नमस्कार को भी जीवन का अंग बना लेना चाहिए ।

साधक के जीवन में

स्वर्ण वर्षा सी होने लगती है

स्वर्णाकर्षण भैरव प्रयोग से

विश्व की दुर्लभ अद्वितीय अलौकिक भौतिक साधना

• जिसे एक बार सम्पन्न करके देख तो लें

जीवन में कई बार ऐसी स्थिति आ जाती है, कि नुष्य अपना कार्य करते-करते निराश हो जाता है, उसी ीवन को संचालित करने हेतु जिस चेतना की, ऊर्जा की, प की आवश्यकता होती है, वह चैतन्य ज्वाला ही मन्द ोने लगती है, निराशा में व्यक्ति कुछ भी कर सकता है, ह सही है, कि पुरुषार्थी व्यक्ति को कार्य करते रहना ाहिए, बाधाओं का हँस कर सामना करना चाहिए, किन्तु वल शास्त्रों में लिखी ये बातें, उपदेशों में दिया गया इस कार का ज्ञान, वास्तविक जीवन में खरा नहीं उतरता।

अरे भाई ! जब कुछ विशेष समस्याएं आ जाएंगी तो उके लिए कुछ विशेष उपाय ही करना पड़ेगा, आखिर स्याओं से लड़ते-लड़ते तो जीवन नहीं काटा जा सकता, ारी तौर पर कोई कितना ही कहे, लेकिन फल-प्राप्ति भावना तो उसके मन में रहती ही है, प्रयत्न करने पर सफलता मिलती है,—तो उत्साह बढ़ता ही है, और यह उत्साह श्रेष्ठ व्यक्ति को और अधिक कार्य करने की प्रेरणा देता है, निराशा–असफलता के कारण ही उत्पन्न होती है, और असफलता, निराशा व्यक्ति के विकास को रोक देती है, उसकी प्रतिभा स्वाभाविक रूप से कार्य नहीं कर पाती है।

साधनाओं के विवेचन

साधनाएं भी मुख्य रूप से दो प्रकार की होती है,— सात्विक और तामसिक, सात्विक साधनाओं में शान्त देवताओं से पूजा अर्चना, जप, निवेदन तथा प्रार्थना किया जाता है, इन साधनाओं में प्रार्थना-भाव, दीन-भाव विशेष रूप से रहता है. इन साधनाओं से अनुकूलता तो प्राप्त होती ही है और साथ ही मानसिक दृष्टि से भी ये साध-

नाएं शान्ति प्रदान करती हैं, व्यक्ति के जीवन में ब्रह्म-तत्व का विकास करती हैं।

तामसिक साधनाएं वे साधनाएं हैं, जिनमें साधक अपना अधिकार मांगता है, कुछ वश में करने की इच्छा रखता है, उसमें साधक अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए साधना-तत्व को प्रबल बनाता है, जो उसे प्राप्त नहीं है, वह मिलना ही चाहिए, और इसके लिए चाहे कुछ भी करना पड़े, तामसिक साधनाएं 'शक्ति' की स्थिति में ही सम्पन्न की जाती हैं।

जब दरिद्रता जीवन में स्थायी रूप से आकर बैठ ही जाय, जब शत्रु इतने अधिक प्रबल हो जाय कि जीवन दुष्कर हो जाय, जब रोग और बीमारी इस प्रकार बढ़ने लगे कि या तो व्यक्ति स्वयं किसी न किसी रोग से निरन्तर ग्रस्त रहे, और रोग उसकी कार्य क्षमता पर, उसके व्यक्तित्व पर प्रभाव डालने लगे अथवा परिवार में बीमारी किसी न किसी रूप में लगती ही रहे, अथवा आकस्मिक दुर्घटनाएं घटित होती रहें, तब इस प्रकार की प्रबल साधनाओं को करने के अलावा कोई अन्य उपाय ही नहीं है, जिस प्रकार आग लगने पर एक-दो बाल्टी पानी डालने से ज्वाला शान्त नहीं होती—और उस समय फायरब्रिगेड को बुलाना ही पड़ता है, इसी प्रकार जीवन में कष्टों की अग्नि प्रज्वलित होने पर तीव्र तामसिक साधनाएं सम्पन्न करना ही एकमात्र उपाय है।

दुःख की अंधियारी काली रात इतनी अधिक लम्बी भी न हो, कि सुख के सूर्योदय की आशा ही खत्म हो जाय, दुःख जीवन के अंग हो सकते हैं,—लेकिन सुखों का सूर्य भी जीवन में जगमगाना ही ही चाहिए।

प्रबल देव-भैरव

भैरव देव के सम्बन्ध में इतना अधिक साधना साहित्य लिखा गया है, कि सामान्य साधक यह निश्चित नहीं कर सकता कि उसे किस प्रकार साधना करनी चाहिए, भैरव देव का मूल स्वरूप क्या है, और उनकी शक्तियां कितनी प्रबल हैं, और भैरव की साधना कर किस प्रकार शक्ति प्राप्त करनी चाहिए?

किसी भी शुभ कार्य में, चाहे वह यज्ञ हो, विवाह हो, वास्तु-स्थापना साधना हो, गृह प्रवेश हो अथवा अन्य कोई मांगलिक कार्य हो, भैरव की स्थापना एवं पूजा अवश्य ही की जाती है, क्योंकि भैरव ऐसे समर्थ रक्षक देव हैं, जो कि सब प्रकार के विघ्नों को, बाधाओं को रोक सकते हैं, और कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण हो जाता है, छोटे-छोटे गांवों में भैरव का स्थान, जिसे 'भैरव चबूतरा' कहा जाता है, देखा जा सकता है, अशिक्षित व्यक्ति भी अपने पूर्वजों से प्राप्त मान्यता-धारणा के आधार पर भैरव-पूजा अवश्य करता है, इसके पीछे सिद्ध ठोस आधार है, तभी यह भैरव पूजा परम्परा चली आ रही है, हिन्दू विवाह में विवाह के पश्चात् "जात्रा" का विधान है, और सर्वप्रथम "भैरव जात्रा" ही सम्पन्न की जाती है, भैरव के विभिन्न स्वरूप हैं, और अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग स्वरूपों की पूजा सम्पन्न की जाती है।

भैरव व्याख्या

भैरव, शिव के अंश हैं, और उनका स्वरूप चार भुजा, खड्ग, नरमुण्ड, खप्पर, और त्रिशूल धारण किये हुए, गले में शिव के समान मुण्ड माला, रुद्राक्ष माला, सर्पों की माला, शरीर पर भस्म, व्याघ्रचर्म धारण किये हुए, मस्तक पर सिन्दूर का त्रिपुण्ड, ऐसा ही प्रबल स्वरूप है, जो कि दुष्ट व्यक्तियों को पीड़ा देने वाला, और अपने भक्तों, साधकों के हर प्रकार के संकट दूर कर, उन्हें अपने आश्रय में अभय प्रदान कर, बल, तेज, यश, सौभाग्य, प्रदान करने में पूर्ण समर्थ देव हैं, भैरव—शिव समान ऐसे देव हैं, जो कि साधक किसी भी रीति से उनकी पूजा-साधना करे—प्रसन्न होकर अपने भक्त को पूर्णता प्रदान करते हैं, भैरव सभी प्रकार की योगिनियों, भूत प्रेत, पिशाच के अधिपति



हैं, भैरव के विभिन्न चरित्रों, विभिन्न पूजा विधानों, स्वरूपों के सम्बन्ध में शिव पुराण, लिंग पुराण इत्यादि में विस्तृत रूप से दिया गया है, भैरव का सुप्रसिद्ध मन्दिर एवं सिद्ध पीठ महातीर्थ काशी में स्थित महाकाल भैरव मन्दिर है।

भैरव के विभिन्न स्वरूपों की साधना अलग-अलग प्रकार से सम्पन्न की जाती है, प्रत्येक विशेष साधना का विशेष उद्देश्य, विशेष विधान और विशेष फल होता है, इस लेख में यह सब संभव नहीं है, इसमें भैरव का एक ऐसा साधना प्रयोग दिया जा रहा है, जो कि साधक के जीवन में अक्षय सौभाग्य प्राप्ति हेतु, दरिद्रता पूर्ण रूप से दूर कर, अक्षय निधि प्राप्त करने का प्रयोग है।

स्वर्णाकर्षण भैरव साधना

यह साधना किसी भी रविवार अथवा मंगलवार को सम्पन्न की जाती है, तथा साधना एकान्त स्थान में—चाहे वह घर हो, अथवा कोई देव स्थान या उद्यान अथवा श्मशान, मूल रूप से यह साधना प्रातः सूर्योदय से पहले ही प्रारम्भ कर देनी चाहिए, जिससे समय पर सम्पन्न हो सके, भैरव साधना में सिन्दूर, लोबान, धूप, काजल का विशेष स्थान है, इसके अलावा कांसी की थाली, **"स्वर्णाकर्षण भैरव गुटिका" "भैरव शक्ति बीज"** लाल पुष्प आवश्यक है, इसके साथ ही विशेष बात यह है कि साधक, साधना में आवश्यक छोटी से छोटी सामग्री की व्यवस्था साधना अर्थात् पूजा प्रारम्भ करने से पहले ही कर लें, यह साधना प्रारम्भ करने के पश्चात् जब तक उस दिन का मन्त्र जप समाप्त न हो जाय, तब तक आसन से न उठें।

स्नान कर, शुद्ध लाल वस्त्र धारण कर, अपने सामने कांसी की थाली में हल्दी डालकर बीचोबीच तिलों की ढेरी बनाकर उस पर स्वर्णाकर्षण भैरव गुटिका स्थापित करें, दोनों ओर एक-एक खड़ी सुपारी रखें, पूजा स्थान में ही तेल का दीपक, धूप और अगरबत्ती जलाएं, भैरव गुटिका के सामने काजल से एक त्रिशूल बना कर उस पर दीपक जलाएं, और अपने बाएं हाथ में जल ले कर सर्व प्रथम शरीर शुद्धि हेतु दाएं हाथ से थोड़ा जल अपने शरीर पर, थोड़ा पूजा स्थान में चारों ओर, और थोड़ा अपने आसन की ओर छिड़कें, तत्पश्चात् दोनों हाथ जोड़ कर स्वर्णाकर्षण भैरव का ध्यान करें—

भैरव ध्यान मन्त्र

पारिजातद्रुकान्तारे स्थिते मणिमयमण्डपे ।
सिंहासनगतं ध्यायेद्भैरवं स्वर्णदायिनम् ।।
गांगेयपात्रं डमरूं त्रिशूलं वरकरैः सदधतं त्रिनेत्रम् ।
देव्यायुतं तप्तसुवर्णवर्णस्वर्णाकृषं भैरवमाश्रयामः ।।

अर्थात् "माणिक्य निर्मित रत्न सिंहासन पर विराजमान, चार हाथों में क्रमशः स्वर्ण पात्र, डमरू, त्रिशूल और अभय मुद्रा धारण किये हुए, तीन नेत्रों वाले, स्वर्ण जैसी कान्तियुक्त आभा वाले, स्वर्णाकर्षण भैरव को—जो साधक को स्वर्ण, धन, सौभाग्य प्रदान करने में समर्थ हैं, इस साधक का प्रणाम।"

सर्वप्रथम भैरव का आह्वान करें—

आह्वान मन्त्र

आयाहि भगवन् रुद्रो भैरवः भैरवीपते।
प्रसन्नोभव देवेश नमस्तुभ्यं कृपानिधि ॥

सर्वप्रथम भैरव ध्यान मंत्र का उच्चारण कर अपने दोनों हाथों में एक लाल पुष्प ले कर भैरव को पुष्पांजली अर्पित करें, इस प्रकार यह पुष्पांजली पांच बार सम्पन्न करनी है, अर्थात् पांच पुष्प भैरव को समर्पित करने हैं।

पुष्पांजली समर्पण के पश्चात् भैरव को तेल से बनी कोई भी वस्तु का नैवेद्य अर्पित करना चाहिए, और फिर स्वर्णाकर्षण भैरव मन्त्र का प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए, भैरव, रुद्राक्ष माला धारण करने वाले देव हैं, इस कारण "रुद्राक्ष माला" से ही भैरव मन्त्र का जप सम्पन्न करना आवश्यक है।

स्वर्णाकर्षण भैरव मन्त्र

॥ ॐ ऐं क्लां क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं
आपदुद्धारणाय अजामलवद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षण भैरवाय मम दारिद्रय-विद्वेषणाय ॐ श्रीं महाभैरवाय नमः ॥

इस प्रयोग में मन्त्र जप के साथ विशेष बात यह है कि प्रत्येक बार मन्त्र जप के साथ ही एक भैरव शक्ति बीज, सिन्दूर में डुबो कर सामने भैरव गुटिका स्थित भैरव को अर्पित करें, इस प्रकार एक माला मन्त्र जप भैरव शक्ति बीजों के साथ सम्पन्न करना है।

जब यह साधना पूर्ण हो जाय तो अपने संकल्प, मनोरथ, कामना की प्राप्ति के लिए पूरे आत्म-विश्वास के साथ प्रार्थना करनी चाहिए।

कई साधकों को इस प्रयोग में विचित्र अनुभव होते हैं, कई बार साधना के बीच में पूजा-स्थान पर ऐसा अनुभव होता है, कि कोई आकर बैठ गया है, अथवा थोड़ी विचित्र आवाजें आती हैं, लेकिन साधक को इसमे विचलित नहीं होना चाहिए, ये सब साधना के श्रेष्ठ रूप से पूर्ण होने के संकेत हैं, कई बार तो साधकों को मन्त्र जप पूर्ण होते-होते भैरव के दर्शन हुए हैं।

साधना की पूर्णता के पश्चात् साधक को उसी स्थान पर बैठ कर, भैरव को अर्पित किया हुआ नैवेद्य ग्रहण करना चाहिए, भैरव का प्रसाद उस स्थान से बाहर ले जाना वर्जित है।

अगले मंगलवार को यह प्रयोग केवल मन्त्र जप के रूप में सम्पन्न करना चाहिए, इस प्रकार तीन बार यह प्रयोग सम्पन्न करने पर अनुकूलता की स्थिति प्राप्त होती है, और कई समर्पित साधकों को तो साधना में पूर्णता के मध्य में ही अनायास धन-प्राप्ति होती है, आय के और धन-प्राप्ति के नये साधन प्राप्त होते हैं।

सम्पूर्ण जीवन को जगमगाहट से भरने के लिए

जरूरी है, कि आप

कालरात्रि साधना

अवश्य ही सम्पन्न करें

क्योंकि हर समस्या का समाधान इस साधना से सम्भव है

एक अचरज भरी साधना

तंत्र साधना का संसार बड़ा ही रहस्यमय, विचित्र एवं चमत्कारिक है, तंत्र मूल रूप से सबसे प्राचीन एवं ईश्वर की वाणी चार वेद—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में से अथर्ववेद का उपवेद है, यदि जीवन में से तंत्र हटा दिया जाय तो कुछ भी नहीं बचता, तंत्र शास्त्र अपने आप में पूर्ण शास्त्र है, जिसमें अपने जीवन को किस प्रकार से संचालित किया जाय, जीवन का मूल तत्व क्या है, किस कार्य की कहां उपयोगिता है, जीवन का क्रियात्मक पक्ष क्या है, भौतिक दृष्टि से जीवन को अनुकूल किस प्रकार बनाया जाय, इसके अलावा सभी प्रकार के ज्ञान, क्रियाओं, योग एवं कार्य प्रणाली का विस्तृत विवरण तंत्र शास्त्रों में दिया गया है।

सम्पूर्ण तंत्र शास्त्र का छः भागों में मूल रूप से विभेद किया गया है, ये तंत्र के छः भेद हैं- १-वैष्णवतन्त्र २- शैवतन्त्र, ३- शाक्त तंत्र, ४- गाणपत्य तंत्र, ५- बौद्ध तन्त्र और ६- जैन तंत्र, इनमें से प्रत्येक तंत्र जीवन के सिद्धान्तों की अलग-अलग रूप से व्याख्या करता है, वर्तमान समय में मुख्य रूप से शैव तंत्र तथा शाक्त तंत्र को ही प्रधानता दी गई है, जो कि तंत्र का क्रियात्मक स्वरूप है, वैष्णव तंत्र में तंत्र की व्याख्या, इसका दार्शनिक भाव, दीक्षा, योग एवं चक्र इत्यादि का वर्णन किया गया है।

तंत्र विवेचन

जब तक तंत्र शास्त्र को, उस ज्ञान को अपने हृदय के कपाट खोलकर मस्तिष्क केन्द्र में संग्रहित नहीं कर लेंगे, तब तक वह ज्ञान आपके शरीर के प्रत्येक अणु को चेतना युक्त नहीं कर सकता है, और तंत्र का ज्ञान और

उसमें सिद्धि ऐसा ही ज्ञान है, जिसमें पूर्ण आस्था से, पूर्ण विधि से क्रिया सम्पन्न कर उस बिन्दु तक लो जाना पड़ता है, कि अपने आस-पास का अस्तित्व ही भूल जाय जब शरीर की कोशिकाएं जाग्रत होती हैं, तो उसमें ऐसी प्रचण्ड शक्ति समा जाती है, कि असंभव से असंभव कार्य भी सरलतम रूप से सम्पन्न हो जाते हैं, बाधाएं खिलौनों स्वरूप लगने लगती हैं।

जिस प्रकार शरीर के लिए भोजन आवश्यक है, उसी प्रकार मन-मस्तिष्क की शक्ति के लिए तंत्र साधना ही ऐसा उपाय है, जो उसे शीघ्र चैतन्य कर सकती है, और यह तो ऐसी शृंखलाबद्ध प्रक्रिया है, जिसमें यदि चेतना का एक अणु भी जाग्रत हो जाता है, तो वह अपने पास वाले दूसरे अणु को जाग्रत करता है, और वह तीसरे को, इस प्रकार पूरा शरीर, ज्ञान, बुद्धि, तेजोमय, चेतनामय, हो जाती है, और तेज ही वह स्थिति है, जो कि मनुष्य को मनुष्य से अलग करती है।

दिवसों का महत्व

साधना के हजार-हजार स्वरूप हैं, और प्रत्येक स्वरूप का अपना एक अलग विधान और एक अलग प्रक्रिया, एक अलग पद्धति और एक अलग प्रकार है, छोटी सी चोट लगने पर हृदय का आपरेशन नहीं किया जाता है, सिर दुखने पर पूरा मस्तिष्क नहीं खोला जाता है, इसी प्रकार जिस प्रकार का कार्य हो, उसी प्रकार की साधना करने से ही अनुकूलता प्राप्त होती है, इस जगत में व्याप्त प्रत्येक कार्य स्थिति का स्वरूप साधना और तंत्र स्वरूप है, लेकिन इसके मूल स्वरूप को समझने की आवश्यकता है।

प्रत्येक साधना के लिए दिन निश्चित है, और उस दिन साधना करने से उसका प्रभाव अपने तीव्रतम रूप से दृष्टिगोचर होता है, हर कार्य का समय होता है, और उचित समय पर उचित कार्य करने से कार्य का परिणाम आशा के अनुरूप ही रहता है, और आजमाने की दृष्टि से किसी भी कार्य अथवा साधना को करना उचित नहीं है, जब तक उसमें आस्था और विश्वास की खाद नहीं पड़ेगी, तब तक साधना का पौधा अंकुरित हो कर वृक्ष नहीं बन सकता है, और न ही आपको मीठे फल दे सकता है।

शैव तंत्र जिसे "आगम" भी कहा जाता है, साधनाओं का क्रियात्मक पक्ष है, और इसमें शिव की पांच शक्तियां चित्त, आनन्द, ज्ञान, इच्छा, और क्रिया को जाग्रत किया जाता है, इस साधना के आगे चल कर विभिन्न भेद किये गये लेकिन सभी भेदों में साधना का प्रधान दिवस अमावस्या ही माना गया है, अमावस्या को "कालरात्रि" भी कहा जाता है, और इस रात्रि की चित्त चेतना का साधना काल में, चित्त चेतना का प्राणों में स्पन्दन होता है, वह शब्दों में वर्णित नहीं किया जा सकता है, उसे तो केवल अनुभव ही किया जा सकता है।

कालरात्रि—महारात्रि

यदि जीवन की यात्रा सीधी सड़क के समान बाधाओं रहित होती तो प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में उन्नति कर पूर्णता प्राप्त कर लेता, लेकिन वास्तविक जीवन में ऐसा नहीं है, जीवन तो विभिन्न प्रकार के बाधा-बन्धनों से ग्रस्त रहता है, अब प्रश्न यह है, कि ये बाधा-बन्धन कितने हावी होते हैं, यदि ये बन्धन तीव्र प्रबल हो जाते हैं तो समय तो नहीं रुकता, और आप अपने जीवन में वहीं के वहीं रुक जाते हैं, एक साधारण सा जीवन बिता कर उम्र पार कर लेते हैं, जो इन बाधा-बन्धनों से होते हुए, इन्हें एक-एक कर काटते हुए, बाधाओं पर हावी हो कर आगे बढ़ने का प्रयास करता है, वही व्यक्ति अपने जीवन में कुछ कर पाता है, और इसका एक मात्र उपायहै—ऐसी साधना जो आपको चैतन्यमय कर सके।

कालरात्रि का तात्पर्य है—समय का समागम, भूत, भविष्य, वर्तमान का संक्रमण काल, कालरात्रि, काल चक्र अर्थात् समय चक्र एक घेरा है, जो कि कालपाश अर्थात् मृत्यु के भी जाल को काट सकता है, कालरात्रि ऐसा समय है, जो कि प्रलय की रात्रि है, जिसमें साधना द्वारा आप अपने दुष्टों,

अपने कष्टों का प्रलय कर सकते हैं और जीवन में सुगन्ध फैला सकते हैं, इसीलिए इस काल बेला में शैव सिद्धान्त की विभिन्न साधनाओं का वर्णन आता है, जो निश्चय ही प्रत्येक साधक के लिए अति आवश्यक है।

काल रात्रि साधना

जीवन में कष्ट पहुंचाने के लिए यह आवश्यक नहीं कि आपके शत्रु ही आपको कष्ट पहुंचाएं, रोग-बाधाएं भी आपके शत्रु हैं, आर्थिक दृष्टि से न्यूनता भी आपको शत्रु है, हर प्रकार की बाधाएं, जो कि आपके उन्नति के मार्ग को रोकें—वे आपके शत्रु हैं, और इस कालरात्रि में, अर्थात् अमावस्या को ऐसी साधनाएं सम्पन्न करनी चाहिए जो कि हर प्रकार के शत्रुओं को परास्त कर सिद्धियों को आपके अनुकूल कर सकें।

इस कालरात्रि की साधना युगों-युगों से प्रत्येक मन्त्र-तन्त्र ज्ञाता द्वारा, पूर्ण रूप से सिद्ध की गई है, और तभी वे अपना जीवन, अपनी इच्छानुसार मोड़ सके हैं।

काल रात्रि तो ऐसी महान महाविद्या है, जिसे विश्व-मोहिनी देवी महारात्रि शक्ति कहा गया है, जो सुषुम्ना नाड़ी को जाग्रत कर साधक का कुण्डलिनी जागरण तक कर सकती है, कालरात्रि साधना—वशीकरण साधना है, दूसरों को अपने प्रभाव के अनुकूल करने की साधना है, है, कालरात्रि साधना अपने शत्रुओं को जड़-मूल से नष्ट करने की साधना है, कालरात्रि साधना—व्यक्तित्व में दिव्य तेज प्राप्त करने की साधना है, कालरात्रि साधना सब प्रकार की बाधाओं को स्तम्भित कर उन्हें पूर्ण रूप से रोकने की साधना है, यह उस देवी की साधना है, जो प्रसन्न होने पर साधक के जीवन के रक्ष और बाधा, फांस को हर प्रकार से काट देती है।

काल रात्रि साधना विधि

यह प्रयोग किसी भी अमावस्या को सम्पन्न किया जा सकता है, जैसा कि स्पष्ट है कि यह रात्रि साधना है, अमावस्या के दिन साधक सायंकाल भोजन न कर केवल दूध इत्यादि हल्का आहार लें, और रात्रि का प्रथम पहर बीत जाने पर १० बजे के पश्चात् साधना प्रारम्भ करें, साधक के मन में कुछ करने को, कुछ पाने की, शक्ति प्राप्त करने की भावना अवश्य ही होनी चाहिए।

साधना प्रारम्भ करने से पहले उस स्थान को—चाहे वह पूजा-स्थान हो, अथवा अपना कमरा या कोई अन्य स्थान, उसे अच्छी तरह से साफ कर लें, निश्चय ही एकान्त तो होना ही चाहिए, जिससे पूरे साधना काल में किसी प्रकार का विघ्न न पड़े।

इस साधना में पांच वस्तुओं की विशेष रूप से आवश्यकता है, यह पांच सामग्री- **"काली यन्त्र"** **"महा-मोहन यन्त्र"**, **"ग्यारह गोमती चक्र"** **"दो तांत्रोक्त फल"** तथा **"विद्युत माला"** हैं, इनमें प्रत्येक वस्तु का एक विशेष विधान है।

अपने सामने साफ लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा कर मध्य में काली यन्त्र स्थापित करें और अपने सामने दाएं कोने में 'महामोहन यन्त्र' स्थापित करें, काली यन्त्र के सामने एक बड़ा फल रखें चाहे वह सेव हो, तरबूज हो, अथवा कोई अन्य फल-यह बलि फल है, अब बाजोट पर एक ओर काजल से त्रिकोण बना कर बीच में "क्रीं" बीज मन्त्र लिखें, काली यन्त्र के दोनों ओर पास में तांत्रोक्त फल स्थापित करें और चार कोनों में चार गोमती चक्र स्थापित करें, पूरे बाजोट के चारों ओर जमीन पर सिन्दूर से एक सीमा रेखा वृत्त रूप में बना दें।

साधक स्नान कर, शुद्ध लाल वस्त्र धारण कर, पूजा-स्थान में आसन पर बैठ कर अपने एक ओर बड़ा घी का दीपक जला दें, इसके अलावा कक्ष में किसी भी प्रकार का प्रकाश नहीं होना चाहिए, कक्ष का दरवाजा बन्द कर दें।

सर्वप्रथम गुरु पूजन कर मानसिक रूप से आज्ञा एवं आशीर्वाद प्राप्त करें और गणेश का ध्यान करें, महा रात्रि का बीज मन्त्र प्रचण्ड शक्तिमान है, और इसका जप साधक शान्त मन से धीरे-धीरे सम्पन्न करें, सर्वप्रथम जल पात्र में से जल ले कर स्थान शुद्धि और सभी सामग्री पर थोड़ा-थोड़ा जल छिड़कें, फिर एक छोटे पात्र में कुंकुम ले कर "क्रीं" बीज मन्त्र का उच्चारण करते हुए सभी

वस्तुओं पर (गणेश को छोड़ कर) अर्पित करें और फिर यही प्रक्रिया सिन्दूर ले कर सम्पन्न करें।

तत्पश्चात् महारात्रि देवी का ध्यान करें और उन्हें अपना स्थान ग्रहण करने की भावना दें और पुष्प माला अर्पित करें।

ध्यान मन्त्र

उद्यन्मार्तण्डकान्ति विगलितकबरी कृष्णवस्त्रावृतांगी
दण्डलिंगकराढ्यैर्वरमथभुवनं सन्दधानां त्रिनेत्राम्।
नानाकल्पोपभासां स्मितमुखकमलां सेवितांदेव-
सर्वैर्मायां राज्ञींमनोभूशरविकलतनुमाद्यमेकालरात्रिम्।

अर्थात् "उदीयमान सूर्य जैसी आभा युक्त, बिखरे खुले केश राशि, काले वस्त्र धारण किये हुए, चार हाथों में दण्ड, शिवलिंग, वर मुद्रा एवं भुवन को धारण किये हुए, त्रिनेत्री, सुशोभित, देवताओं से भी सेवित महारात्रि कालरात्रि प्रसन्न हों।"

इसके बाद साधक अपने जिन विशेष कार्यों के लिए यह साधना सम्पन्न करना चाहता है, जिन बाधाओं का निवारण करना चाहता है, निवारण की स्पष्ट शब्दों में कालरात्रि देवी से प्रार्थना करते हुए, अपने अधिकारों की पूर्ति हेतु, पूरे आत्म विश्वास के साथ सिद्धि प्रार्थना करें, और इस संकल्प के साथ अपने दाएं हाथ में जल ले कर छोड़ दें।

अब विद्युत माला से कालरात्रि मन्त्र का उच्चारण स्पष्ट रूप से बोलते हुए करें, तथा अपने मन से सभी प्रकार का डर निकाल दें और जब तक साधना पूर्ण न हो जाय, तब तक स्थान नहीं छोड़ें, विद्युत माला से तीन माला जप उसी स्थान पर बैठ कर करना अनिवार्य है।

काल रात्रि मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं कामेश्वरि सर्वजनमनोहरि सर्वमुखस्तम्भनि सर्वराजवशंकरी सर्वदुष्टनिर्दलनि सर्वस्त्रीपुरुषकर्षिणि बन्दी शृंखलास्त्रोटय त्रोटय सर्वशत्रून्भंजय भंजय द्वेष्टृन् निर्दलय निर्दलय सर्व स्तम्भय स्तम्भय मोहनास्त्रेण द्वेषिणः उच्चाटय उच्चाटय सर्व वशं कुरु कुरु स्वाहा देहि देहि सर्व कालरात्रि कामिनि गणेश्वरि नमः॥

प्रत्येक बार मंत्र जप के साथ सिन्दूर में रंगे हुए चावल, जिसकी पहले से व्यवस्था कर लें, (अर्थात् चावलों को सिन्दूर डालकर रंगीन बना लें) अपने बांए हाथ से दक्षिण दिशा की ओर पूजा स्थान में फेंकते रहें।

यह साधना ऐसी सम्पूर्ण साधना है, जो साधक को किसी प्रकार का कष्ट नहीं पहुंचाती है, और इस मंत्र में ऐसी शक्ति है, कि इसके जप के समय किसी भी प्रकार का भूत-पिशाच अथवा डरावनी आवाजें जैसा विघ्न उपस्थित नहीं हो सकता है, साधना में ऐसा अनुभव होता है, कि कोई तीव्र आभायुक्त वस्तु उस स्थान पर उपस्थित है, और साधना स्थान में प्रकाश बढ़ जाता है, यह साधना में अभीष्ट सिद्धि का स्पष्ट संकेत है।

जब तीन माला मंत्र जप पूर्ण हो जाय तो सामने रखे हुए फल को अपने दाहिने हाथ की मुट्ठी से प्रहार कर देवी को अर्पित करें, और फिर बाद में स्वयं भी इस प्रसाद को ग्रहण करें।

इस सम्पूर्ण साधना के पश्चात्, काली यंत्र तथा महामोहन यंत्र को अपने पूजा स्थान में ही स्थापित कर दें, तथा अन्य सभी सामग्री उसी लाल वस्त्र में बांधकर, पूजा स्थान में अथवा घर में किसी कोने में रख दें, तथा मंत्र जप के समय फेंके गये सिन्दूरयुक्त चावलों को एकत्र कर, घर से बाहर काफी दूरी पर फेंक दें।

एक अमावस्या में प्रयोग में पूर्ण सफलता न मिलने पर दूसरी अमावस्या को काली यंत्र तथा महामोहन यंत्र के आगे विद्युत माला से कालरात्रि मंत्र की दीपक जला कर एक माला मंत्र जप अवश्य करें, योग्य साधक तो प्रति अमावस्या को इस साधना को लघु रूप में अवश्य ही सम्पन्न करते हैं, मन्त्र जप प्रति अमावस्या को २१ बार भी सम्पन्न किया जा सकता है।

अभीष्ट सिद्धि प्राप्त होने पर अपने अन्दर प्राप्त शक्ति का प्रयोग किसी भी प्रकार के गलत कार्यों हेतु नहीं करना चाहिए, हर समय यह ध्यान रहे कि देवी सज्जनों की सहयोगी और दुष्टों की संहारक है।

जो सिद्धि एवं सफलता

किसी भी तन्त्र से प्राप्त नहीं होती

वह

कौमारी तन्त्र साधना

से तो होती ही है

प्रत्येक गृहस्थ व्यक्ति के लिए अनिवार्य साधना

गृहस्थ व्यक्ति के लिए अपने जीवन में गृहस्थ धर्म निभाना ही बहुत बड़ी साधना हो जाती है, गृहस्थ व्यक्ति अपने जीवन में इतने अधिक बन्धनों से युक्त रहता है, कि उसके लिए घर-बार छोड़कर साधना करना, गुरुभक्ति में में अपने आप को पूर्ण विलीन कर देना संभव नहीं होता है, उसके लिए तो प्रातः से ही गृहस्थ-धर्म का जो चक्र प्रारम्भ होता है, वह रात्रि-शयन तक भी पूरा नहीं हो पाता है, कभी पत्नी की चिन्ता, कभी बच्चों के स्वास्थ्य की चिन्ता, तो कभी अपने माता-पिता की चिन्ता वह नौकरी अथवा व्यापार भी तो अपने गृहस्थ-धर्म को निभाने के लिए ही करता है, गृहस्थ व्यक्ति श्मशान जा कर तीव्र विशिष्ट साधनाएं सम्पन्न नहीं कर सकता है, और न ही वह किसी विशिष्ट समय के लिए विशेष शक्ति पीठों पर जा कर साधना की विशेष अनुभूति प्राप्त कर सकता है, क्योंकि उसके साथ गृहस्थ धर्म इस प्रकार से जुड़ जाता है, कि उसका मन दूसरे स्थान पर जा कर भी घर में अटका ही रहता है।

अब प्रश्न यह उठता है, कि आखिर गृहस्थ व्यक्ति क्या करे ? ऐसा क्या पूजन करें, ऐसी क्या साधना करें जो कि उसके गृहस्थ धर्म की मर्यादा के अनुकूल हो, और वह इन साधनाओं को अपनी पत्नी के साथ, पूरे परिवार के साथ सरलता पूर्वक सम्पन्न कर सके, जिसके प्रभाव से उसे अपने कार्यों में, अपना जीवन-धर्म निभाने में अनुकूलता प्राप्त हो, उसे मानसिक शान्ति प्राप्त हो, समाज में उसका सम्मान बढ़े, उसकी दिन-प्रतिदिन की चिन्ताएं कम होती जांय।

नारी शक्ति साधना

नारी-शक्ति के महत्व से किसी भी प्रकार मुख नहीं मोड़ा जा सकता, नारी-शक्ति ही किसी भी व्यक्ति में पूर्णता प्रदान करती है, आप कल्पना कीजिए, कि व्यक्ति अपने कार्य से दिन भर का थका हुआ घर आये और उसे अपनी पत्नी से मधुर स्वागत और मधुर वचन प्राप्त हों, तो वह निश्चय ही सब प्रकार के तनाव और दिन भर की थकान भूल ही जाता है, और यदि उसे अपनी पत्नी के कटु वचन सुनने पड़ें, तो उस व्यक्ति को यही लगता है कि शायद नरक भी इस जीवन से अच्छा होता होगा, नारियों के संबंध में जितने ग्रन्थ पुस्तकें, साहित्य कविता, शेरो शायरी लिखी गई है, उतना विस्तृत वर्णन किसी अन्य वस्तु के बारे में लिखा ही नहीं गया है, प्रेमी हृदय तो हर समय अपनी प्रेमिका के चिन्तन में ही मग्न रहता है, और उसकी एक झलक के लिए दीवाना रहता है, और इस संबंध में, प्रेम से अपने जीवन को उत्सर्ग कर देने वालों की संख्या भी कम नहीं है, और प्रत्येक लोक साहित्य में ऐसी कथाएं मिलती हैं, जिनका बड़े उत्साह से गायन किया जाता है।

यह नारी-शक्ति ही है, जो इस सृष्टि-क्रम में निरन्तरता के साथ स्थिरता प्रदान करती है, पार्वती के बिना शिव, लक्ष्मी के बिना विष्णु, राधा के बिना कृष्ण, सीता के बिना राम, तथा भगवती के बिना नारायण की कल्पना नहीं की जा सकती।

कौमारी साधना

साधनाएं तो प्राचीन समय से ही चली आ रही हैं, और कुछ पूजाएं जीवन का अंग बन गई हैं, इन पूजाओं के पीछे विधिवत मान्यता क्या है, और किस प्रकार से इन्हें सही रूप से सम्पन्न किया जाना चाहिए, इसका ज्ञान बहुत कम लोगों को है।

नवरात्रि में नवमी के दिन, नौ कुंवारी कन्याओं, बालिकाओं का पूजन, भोजन एवं दक्षिणा की परम्परा भारतवर्ष के करीब-करीब सभी प्रान्तों में मानी जाती है।

इसके पीछे मूल कारण कुमारी-शक्ति का पूजन ही है, जो कि विधिवत रूप से सम्पन्न की जाए तो गृहस्थ व्यक्ति को हर प्रकार का सुख, एवं शान्ति देने में समर्थ है, इस संबंध में शास्त्रों में विशेष विवरण दिया गया है, "रुद्रयामल तंत्र" के उत्तर खण्ड के सातवें पटल में लिखा है, कि किसी भी जाति की कुमारी पूजन के योग्य है, और इसमें किसी प्रकार का भेद नहीं करना चाहिए, कुमारी ही समस्त विद्या-स्वरूपा, महा सिद्धि-प्रदाता है, "कुब्जिका तंत्र" में लिखा है, कि आठ वर्ष से तेरह वर्ष तक की कन्या कुलजा कहलाती है, और उसमें देवता का निवास समझ कर पूजन करना चाहिए।

"काल तंत्र" के अनुसार, कौमारी साधना से साधक को यह सिद्धि प्राप्त हो जाती है, कि वह साक्षात शिव को अपने वश में कर "बटुकेश महादेव" से किसी भी प्रकार का वर मांग सकता है।

कौमारी साधना तो अत्यन्त सरल, शान्त एवं पूर्ण फल युक्त साधना है, जिससे साधक अपने कुल, वंश का उद्धार कर, सभी देवताओं को प्रसन्न कर, सौभाग्य एवं सम्पत्ति प्राप्त कर सकता है, "शारदा तिलक" में लिखा है, कि जो साधक कौमारी साधना एवं पूजन सम्पन्न करता है, उस पर इस जन्म का तो क्या पूर्व जन्म का भी पाप नष्ट हो जाता है, जिस घर में कौमारी साधना सम्पन्न की जाती है, वह निश्चय ही पवित्र हो जाता है, "रुद्रयामल तन्त्र" में लिखा है, कि यदि कम बुद्धि वाला, जन्म से ही दुर्भाग्य वाला व्यक्ति भी कौमारी साधना विधिवत् सम्पन्न करता है, तो वह पूर्ण विजय और मंगल फल प्राप्त करता है, तथा महा सुख की ओर अग्रसर होता है।

कौमारी पूजा स्वरूप

कौमारी पूजा दो प्रकार से सम्पन्न की जाती है, प्रथम दिव्य भाव में और दूसरी वीर भाव में, इन दोनों ही भावों में विशेष अन्तर नहीं है, दिव्य भाव साधना में साधक को मानसिक दृष्टि से शान्ति प्राप्त होती है, तन्त्र मन्त्र का साक्षात् फल प्राप्त होता है, तथा साधक विशेष सिद्धियों का स्वामी बनता है।

वीर भाव में कौमारी साधना सम्पन्न करने से धन तथा विद्या की सिद्धि प्राप्त होती है, कौमारी पूर्ण रूप से प्रसन्न होने पर साधक के जीवन में क्रान्ति सी उत्पन्न कर देती है, और "बृहन्नील तन्त्र" के अनुसार ऐसे साधक को जीवन में किसी प्रकार से उपद्रव, विघ्न, भूत-बाधा, नहीं सता सकते।

कौमारी साधना साक्षात् पार्वती साधना है, और यह समस्त सिद्धियों का स्वरूप है, कौमारी में बाल भैरव स्थित होते हैं और इसी कारण इस साधना से पार्वती-जो सरस्वती स्वरूपा है, उनकी सिद्धि प्राप्त होती है, और भैरव प्रसन्न होते हैं।

कौमारी साधना दिवस

यह साधना प्रत्येक पक्ष की नवमी तिथि को सम्पन्न की जा सकती है, इस वर्ष माघ कृष्ण नवमी बुधवार दिनांक ९-१-९१ को कौमारी पूजा सिद्धि दिवस है, उस दिन गृहस्थ साधक इस सुन्दर, शान्त, कान्ति देने वाली साधना को अवश्य ही सम्पन्न करें, और रात नवमी तक निरन्तर पूजन कर इसका पारायण करना चाहिए।

साधना विधि

इस साधना में विशेष सामग्री की आवश्यकता नहीं है, केवल "कौमारी यन्त्र चित्र", "नीलाक्ष माला", पुष्प माला, पुष्प तथा अक्षत आदि आवश्यक है।

इस साधना में विशेष बात यह है, कि पति-पत्नी दोनों पूजन में साथ बैठें तो अत्यन्त उत्तम रहता है, पुरुष सुन्दर वस्त्र पहन कर पूजा-स्थान में सुगन्धित वातावरण कर, शुद्ध घी का दीपक लगा कर, पूजन से पहले भगवती कौमारी को पूजन हेतु आमन्त्रित कर, स्वयं को कृतार्थ अनुभव कर, प्रदक्षिणा कर, पूजन कार्य करें, स्त्री स्नान कर, सुगन्ध का प्रयोग करें, ललाट में सिन्दूर, आंखों में काजल तथा आभूषण इत्यादि पहन कर अपने पति के साथ पूजन सम्पन्न करें।

पति-पत्नी दोनों अपने दाएं हाथ में जल ले कर संकल्प करें कि—

अमुक फल प्राप्तयेऽमुककर्मण्यमुक देव्याः प्रीयते कुमारीणां पूजनं करिष्ये ॥

यहां अमुक के स्थान पर साधक जिस विशिष्ट कार्य में पूर्ण अनुकूलता प्राप्त करना चाहता है, चाहे वह संतान संबंधी कार्य हो, शत्रु बाधा निवारण संबंधी कार्य हो अथवा आर्थिक उन्नति हेतु कार्य हो, उस विशेष कार्य का नाम ले कर, संकल्प कर जल छोड़ें, साधना एक ऐसा कार्य है, जिसमें साधक को किसी भी प्रकार का संकोच नहीं करना चाहिए, संकल्प में अपनी इच्छाएं स्पष्ट रूप से व्यक्त कर देनी चाहिए, वीर भाव से कौमारी साधना में साधक को दृढ़ संकल्प के अनुरूप ही सफलता प्राप्त होती है।

अब साधक अपने बाएं हाथ में जल ले कर दाएं हाथ से शरीर के सभी अंगों तथा स्थान, आसन इत्यादि पर शुद्धता हेतु छींटे फेंकें, इसके पश्चात् देवी कौमारी का मानस ध्यान करें, इस ध्यान मन्त्र के पांच बार उच्चारण के साथ प्रत्येक बार सामने यन्त्र-चित्र पर पुष्प अर्पित करें, और अन्त में पुष्प-माला अर्पित करें।

ध्यान मन्त्र

ॐ शंखकुन्देन्दु धवलां द्विभुजां वरदाभयाम् ।
चन्द्रमध्यमहाम्भोज हावभावविराजिताम् ।।
बाल रूपां च त्रैलोक्यसुन्दरीं वरवर्णिनीम् ।
नानालंकारनम्रांगीम्भद्र विद्याप्रकाशिनीम् ।।
चारुहास्यां महानन्दहृदयां शुभदां शुभाम् ।।

अब कौमारी देवी को सामने रखे पात्र में जल, पुष्प, अक्षत, दही, धूप, दीप, सुपारी, नैवेद्य, पान अर्पित करें, प्रत्येक बार अर्पण के समय—"ऐं ह्रीं श्रीं हुं ह्सौः कुल कुमारिकायै नमः जलं समर्पयामि" कहें जिस चीज का अर्पण करें, उस चीज का नाम उपरोक्त 'जलं' के स्थान पर लेते हुए, उपरोक्त मन्त्र से समर्पित करें, और फिर अपने दाहिने हाथ को यन्त्र-चित्र पर रखते हुए यह भावना दें कि शुक्ल वर्णा, सर्वमय नीलाञ्जन प्रभा, अरुण के समान तेज, तेजस्वी नेत्र, रक्त वर्णीय देवी को साधक का प्रणाम है।

कौमारी के सोलह स्वरूप हैं, इनमें प्रत्येक स्वरूप का नाम लेते हुए "ॐ ऐं ....नमः" का उच्चारण करें यह सोलह नाम— १-सन्ध्यायै, २-सरस्वत्यै, ३-त्रिमूर्त्यै, ४-कालिकायै, ५-सुभगायै, ६-उमायै, ७-मालिन्यै, ८-कुब्जिकायै, ९-कालसंकर्षिण्यै, १०-अपराजितायै, ११-रुद्राण्यै, १२-भैरव्यै, १३-महालक्ष्म्यै, १४-पीठनायिकायै, १५-क्षेत्रज्ञायै, १६-चर्चिकायै, हैं, इनसे ही यह स्पष्ट होता है कि कौमारी साधना का स्वरूप कितना विशिष्ट एवं सिद्धि-कारक है।

सबसे बड़ी विशेष बात यह है, कि कौमारी साधना से बाल भैरव की सिद्धि प्राप्त होती है और उसकी स्थापना भी कौमारी के साथ आवश्यक है, इस कारण साधक-साधिका प्रणाम कर "ॐ कुलकुमारिकायै सपरिवारं बाल भैरवायै नमः" मन्त्र का ग्यारह बार उच्चारण कर भैरव स्वरूप—बाल भैरव स्थापित करें और सिन्दूर, पुष्प इत्यादि अर्पित करें।

अब साधक और साधिका नीलाश्म माला से कौमारी के बीज मन्त्र का पांच माला जप करें, माला पति-पत्नी दोनों में से किसी एक के हाथ में रहे।

बीज मन्त्र

।। ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हुं ह्सौः कुलकुमारिके
नमः स्वाहा ।।

जब मन्त्र जप, अनुष्ठान पूरा हो जाय तो पति-पत्नी दोनों उस पूजा स्थान की परिक्रमा करें, गुरु-ध्यान करें, आरती इत्यादि सम्पन्न करें, और फिर कुमारी कन्याओं को भोजन कराएं, और उन्हें यथायोग्य दक्षिणा दें।

कौमारी साधना के बारे में यदि फि[illegible]खा जाय तो एक पूरा साहित्य ही रचा जा सकता है, संक्षिप्त में जो वर्णन "रुद्रयामल तन्त्र" में दिया गया है, वह इस प्रकार है कि—

इस साधना से साधक वाणी-शक्ति प्राप्त करता है, और भाव प्राप्त कर दिव्य महासिद्धियों का स्वामी बनता है, उसे पराजय का सामना नहीं करना पड़ता, और शिव को पूर्ण प्रसन्न करने में समर्थ रहता है, तथा भगवान शिव की सदैव उस पर कृपा रहती है, समस्त दिक्पाल तुष्ट होते हैं, जिससे उसके कार्यों में विघ्न नहीं आता है, महाविद्या के चरण कमलों का आशीर्वाद निश्चित रूप से प्राप्त करता है, उसकी कीर्ति और लक्ष्मी सदैव बढ़ती जाती है।

यदि प्रत्येक नवमी को मन्त्र जप कर कुमारी कन्याओं को भोजन कराएं, तो भी निश्चित अनुकूलता प्राप्त होती ही है।

वीरता, तेज, बल, पराक्रम की प्राप्ति

हनुमान साधना

से

होती ही है

जो सरलतम रूप से सम्पन्न की जा सकती है

प्रत्येक व्यक्ति के लिए अत्यन्त श्रेष्ठ, उपयोगी तथा अनिवार्य साधना

जहां भक्ति है, वहीं ज्ञान का प्रकाश भी है, वहीं साधना का स्वरूप भी है, साधना किस स्वरूप में की जाय,–इस विषय में विशेष मत मतान्तर हो सकते हैं, लेकिन इतना तो सिद्ध है, कि साधना का बाण जब छूटता है तो वह लक्ष्य की ओर ही बढ़ता है, यह तो साधक की भावना उसकी भक्ति, उसकी साधना ,गुरु-कृपा पर निर्भर करता है, कि वह अपनी साधना के कारण, अपने साधना बाणों में कितनी तीव्रता ला सकता है, जिससे उसका लक्ष्य शीघ्र प्राप्त हो।

जीवन में हर कोई चाहता है, कि उसे ऐसा शक्ति आधार प्राप्त रहे–जिससे कि हर संकट के समय उसे सहायता चाहे मानसिक हो अथवा किसी अन्य माध्यम से प्राप्त हो, और इसका सबसे बड़ा उपाय साधना ही है, तथा साधना में सेवा-भाव का होना आवश्यक है, जब तक आप अपनी साधना में लीन होने का भाव उत्पन्न नहीं कर देते, शंका के वातावरण में साधना करते हैं–तो फिर सफलता कैसे मिल सकती है ? जो सेवा-भाव से कार्य करता है, भक्ति करता है, साधना करता है–वह अपने आपको सामान्य स्तर से ऊपर उठा देता है, क्योंकि उसमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने को चाहत बन जाती है, और जिसकी साधना करता है–उसे प्रसन्न होना ही पड़ता है।

यदि यह कहा जाय कि पूरे भारतवर्ष में देवी-देवताओं के मन्दिर और उनके स्थानों की भरमार ही है, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी, कुछ मन्दिर तो इतने अधिक प्राचीन हैं, कि उस समय की सभ्यता, जीवन-धारा, आदर्श एवं उनके सुख और वैभव को देख कर आश्चर्य ही होता है, लेकिन आज स्थिति बिल्कुल विपरीत होती जा रही है, मन्दिरों की जगह एक प्रकार से दिखावटी महलों का निर्माण किया जाता है, ऐसे स्थानों पर पूजा कर क्या साधना के परमतत्व की अनुभूति हो सकती है ?

पूर्वजों को कम बुद्धिवाला मानने वाले, आज के तर्क बुद्धि रखने वाले व्यक्ति स्वयं ही वास्तविक रूप से मूर्ख व्यक्ति हैं, भारतवर्ष के प्रत्येक गांव में शिव मन्दिर के साथ-साथ हनुमान मन्दिर अथवा हनुमान जी का स्थान अवश्य ही मिलता है, लोक जीवन में हनुमान जी को जो स्थान प्राप्त है, वह किसी अन्य देवी-देवता को प्राप्त नहीं है, इसका कारण यह है, कि हनुमान देव इतने अधिक सरल, सात्विक, कृपालु, बल, बुद्धि, शारीरिक निरोगता के देव हैं–जिन्हें हर साधक, हर व्यक्ति अपने जीवन में सहज ही आदर्श बना सकता है।

हनुमान जी के बारे में दो बातें विशेष सिद्ध हैं, सर्व-प्रथम तो हनुमान–रुद्र अर्थात् शिव के अवतार हैं और दूसरा यह पवन पुत्र हैं, हनुमान-पूजन साधना से रुद्र सिद्धि प्राप्त होती है, श्री हनुमान वीरता, पराक्रम, दक्षता, के प्रतीक हैं, और शक्ति, बल, वीर्य, ओज, स्फूर्ति, धैर्य, यश, निर्भयता, निरोगता, विवेक, वाक्‌पटुता इत्यादि महा-गुणों के प्रदाता हैं, इस कारण जो साधक, जो व्यक्ति चाहे उसे शास्त्रों का ज्ञान हो या न हो, अपनी बुद्धि के अनुसार पूर्ण सेवा भाव से यदि हनुमान साधना–भक्ति सम्पन्न करता है, तो उसे यह सभी गुण निश्चय ही प्राप्त होते हैं, शक्ति बाहर से प्राप्त नहीं की जा सकती और न ही बाजार में मिलती है, शक्ति-स्रोत तो आपके मन के भीतर छुपा है, उसे जाग्रत करने की आवश्यकता है, जिससे मन के साथ-साथ शरीर भी ऐसा तेजस्वी, बलवान और निरोगी हो जाय कि आत्मविश्वास का अमृत प्याला, शक्ति का सौन्दर्य, ज्ञान की गंगा, धैर्य का सागर, सरस्वती की सिद्धि आपमें छलकने लगे —यही तो भक्ति, साधना का परम स्वरूप है।

हनुमन्त देव—मूल स्वरूप

हनुमान मूल रूप से भगवान शंकर के अवतार हैं, क्योंकि जब भगवान विष्णु द्वारा राम का स्वरूप ग्रहण कर अवतार लिया गया तो भगवान शंकर ने हनुमान के रूप में अवतार लिया, इस प्रकार विष्णु एवं रुद्र के प्रभाव से ही विशिष्ट माया क्रियाएं पूर्ण हो सकीं, मूल हनुमान स्वरूप वीर भाव के साथ-साथ सेवा तथा आदर्श का स्वरूप मुख्य रूप से है, ऐसा अपने कार्यों में पूर्णत्व प्राप्त करने के लिए जिस समर्पण भाव का हनुमान स्वरूप में वर्णन मिलता है, वही समर्पण-स्वरूप साधक द्वारा ग्रहण करने से ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है, हनुमान साधना आदि के सम्बन्ध में सम्पूर्ण ग्रन्थ "हनुमत उपासना कल्पद्रुम" है, जिसमें हनुमान साधना विधि-विधान आदि से सम्बन्धित सम्पूर्ण विवरण सर्वोत्तम रूप से लिखा गया है, पवन-पुत्र होने के कारण हनुमान जी की शक्तियां अत्यन्त विशाल एवं प्रबल मानी जाती हैं, और यही फल साधक को अपनी साधना में प्राप्त होता है।

अलग-अलग शास्त्रों में इस विशेष साधना का अलग-अलग स्वरूप मिलता है, इस सम्बन्ध में वास्तविक स्वरूप पाठकों के लिए सम्पूर्ण रूप से प्रस्तुत किया जा रहा है।

हनुमान पूजा विधान

हनुमान पूजा साधना में सबसे विशेष बात यह है कि साधक, साधना में भावना कैसी रखता है, और उसमें समर्पण भाव कितना है, यह समर्पण भाव ही साधक को इस विशेष साधना में तत्काल फल प्रदान करता है, क्योंकि हनुमान-कृपा, सेवा और समर्पण से ही प्राप्त होती है।

ऐसी कोई बाधा नहीं, ऐसा कोई रोग नहीं, ऐसा कोई संकट नहीं—जो हनुमान साधना से दूर न हो सके, हनुमान साधना में सिद्धि और हनुमान का इष्ट प्राप्त साधक हजारों शत्रुओं के बीच से निकल जाय तो भी शत्रु उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते, भूत-पिशाच का डर-भय और हानि हनुमान साधना सिद्ध साधक को कभी नहीं हो सकती, चाहे वह आधी रात को श्मशान में ही जा कर क्यों न बैठ जाय, भूत-प्रेत, पिशाच सभी का बल हनुमान के आगे नष्ट हो जाता है।

जहां तक ग्रहों का प्रश्न है, हनुमान साधना से विप-रीत ग्रह पूर्ण रूप से शान्त होते हैं, और शास्त्रों में ऐसा

निश्चः है कि हनुमान और सूर्य एक दूसरे के स्वरूप हैं, और इनकी परस्पर मैत्री अत्यन्त प्रबल है, इसीलिए हनुमान साधना करने वाले साधक में सूर्य तत्व अर्थात् आत्मविश्वास, ओज, तेजस्विता विशेष रूप से आ जाती है, यह तेज ही तो साधक को सामान्य व्यक्तियों से अलग करता है।

हनुमान—मूल साधना

इस विशेष साधना को यदि थोड़े विधि-विधान सहित सम्पन्न किया जाय तो साधना में फल प्राप्ति शीघ्र होती है, किसी प्रकार का दोष न रहने से साधना तत्व की प्राप्ति बिना विघ्न के, इच्छानुसार प्राप्त होती है, पूजा जिस विधि से की जाय उसका पालन निरन्तर आवश्यक है, कोई भी पूजा-साधना विशेषकर हनुमान साधना तो मजाक के तौर पर अथवा केवल प्रयोग के तौर पर नहीं करनी चाहिए।

षोडशोपचार पूजा

इस पूजा में मूल रूप से सभी साधनाओं में आवश्यक सोलह तत्व विद्यमान हैं और क्रमबद्ध रूप से इन्हें सम्पन्न करने से ही साधना पूर्ण होती है, यह षोडशोपचार पूजन क्रम में—१-आह्वान, २-आसन, ३-पाद्य, ४-अर्घ्य, ५-आचमन, ६-स्नान, ७-वस्त्र, ८-गन्ध, ९-अक्षत (चावल), १०-पुष्प, ११-धूप, १२-दीप, १३-नैवेद्य, १४-पुनराचमन, १५-ताम्बूल (सुपारी), १६-दक्षिणा-प्रदक्षिणा, सम्पन्न करना चाहिए, हनुमान साधना मंगलवार के दिन ही प्रारम्भ की जानी चाहिए, और इस दिन प्रातः साधक स्नान कर, शुद्ध वस्त्र धारण कर, अपने पूजा स्थान में सर्वप्रथम "हनुमानजी की मूर्ति अथवा चित्र" स्थापित करें, साथ ही सिद्ध "हनुमान यन्त्र" "हनुमान गुटिका", अपने सामने लाल वस्त्र बिछा कर स्थापित करें, सर्वप्रथम साधक सिन्दूर से स्वयं के तिलक करें, और हनुमान मूर्ति (चित्र), हनुमान गुटिका तथा यन्त्र पर भी सिन्दूर अवश्य चढ़ाएं, हनुमान साधना में सिन्दूर का घी कि तेल मिश्रित हो, विशेष विधान है, एक ओर तेल का दीपक तथा दूसरी ओर धूप जलाएं।

सर्व प्रथम पंचामृत से हनुमान गुटिका तथा यन्त्र को स्नान कराएं फिर शुद्ध जल से स्नान कराएं और उसके पश्चात् सिन्दूर अर्पित कर, हनुमान का आह्वान करें।

ध्यान मन्त्र

बालार्कायुत तेजसं त्रिभुवन प्रक्षोभकं सुन्दरम्
सुग्रीवादिसमस्तवानरगणैः संसेव्यपादाम्बुजम् ।
नादेनैव समस्तराक्षसगणान्संत्रासयन्तं प्रभुं
श्रीमद्रामपदाम्बुजस्मृतिरतं ध्यायामि वातात्मजम् ॥

अर्थात् "बुद्धिमान, सूर्य जैसी आभा वाले, तीनों लोकों को प्रभावित करने वाले, प्रबल, अपने हुंकार से सम्पूर्ण भूत-प्रेत बाधाओं को दूर करने वाले, भगवान राम के परमतत्व स्वरूप-श्री हनुमान जी मेरे पूजा स्थान में आसन ग्रहण करें, और मुझे पूजन का अभीष्ट फल प्रदान करें।"

इसके पश्चात् साधक को सिन्दूर लेपन कर, सामने एक जल पात्र में जल अर्पित कर स्वयं भी थोड़ा जल ग्रहण करना चाहिए और हनुमान यन्त्र और गुटिका को मौली, अबीर-गुलाल, अक्षत, पुष्प, सुपारी तथा गुड़ का प्रसाद समर्पित करना चाहिए।

इसके पश्चात् दोनों हाथ जोड़ कर श्री हनुमान के विभिन्न स्वरूपों का ध्यान करते हुए नमन करना चाहिए—

ॐ राम भक्ताय नमः ।	ॐ महातेजसे नमः ।
ॐ कपिराजाय नमः ।	ॐ महाबलाय नमः ।
ॐ द्रोणाद्रिहारकाय नमः ।	ॐ मेरुपीठकार्चन-कारकाय नमः ।
ॐ दक्षिणाशा भास्कराय-नमः ।	ॐ सर्व विघ्न-निवारकाय नमः ।

इस प्रकार से पूजन में आठ सुपारी एक-एक करके प्रत्येक नमस्कार के साथ सिन्दूर में भिगो कर अपने सामने स्थापित करनी चाहिए।

हनुमान साधना के विभिन्न स्वरूप होते हुए भी मूल साधना मन्त्र एक ही है, और इस प्रकार विधि-विधान सहित पूजन करने के पश्चात् मन्त्र सिद्ध "मूंगा माला" से उसी स्थान पर बैठे-बैठे ग्यारह माला मन्त्र जप करना चाहिए।

हनुमान बीज मन्त्र

ह्रीं ह्स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं हनुमते नमः ॥

यह बीज मन्त्र प्रबल शक्तियुक्त, द्वादश अक्षर मन्त्र है, जिसके प्रत्येक वर्ण में स्थित शक्ति तत्व है, इसमें इन्द्र, रुद्र, अग्नि, चन्द्र, सूर्य, शक्तिपुंज हनुमान तत्व विद्यमान है।

प्रत्येक माला मन्त्र जप के पश्चात् अपने दोनों हाथों में पुष्प लेकर, अपने सामने हनुमान यन्त्र तथा गुटिका पर अर्पित करने चाहिए, इस प्रकार ग्यारह माला मन्त्र जप सम्पन्न करना आवश्यक है।

मन्त्र जप के पश्चात् साधक हनुमान गुटिका को धारण कर सकता है, और यन्त्र को पूजा स्थान में ही रहने दें, किसी भी विशेष कार्य हेतु अथवा बाहर जाते समय हनुमान ध्यान कर बाहर निकलने से किसी प्रकार कष्ट संकट नहीं रहता।

विभिन्न कार्यों में, विभिन्न मन्त्र जप का विधान है, कुछ विशेष मन्त्र नीचे स्पष्ट किये जा रहे हैं—

१- शत्रु संकट निवारण प्रयोग – इस विशेष हनुमान साधना में पूजा विधान तो वही रहता है, निम्नलिखित मन्त्र की ५१ माला तीन मंगलवार तक नियमित रूप से जप करने से किसी भी प्रकार के शत्रु का भय समाप्त हो जाता है, और शत्रु शान्त होकर साधक के वश में हो जाता है—

मन्त्र

॥ ॐ पूर्वकपिमुखाय पंचमुखहनुमते टं, टं, टं, टं सकल शत्रु संहारणाय स्वाहा ॥

२- बीमारी, संकट, ग्रह दोष निवारण हनुमान प्रयोग—इस विशेष प्रयोग को मंगलवार को अर्द्धरात्रि को सम्पन्न करना चाहिए, उस दिन साधक दिन भर उपवास रखें तथा रात्रि को ऊपर दिये गये पूर्ण विधान से यन्त्र तथा गुटिका स्थापित कर, अपने सामने एक साफ कागज पर बीमारी बाधा इत्यादि का विवरण लिख कर गुटिका के नीचे रखें, और फिर इस मन्त्र का जप जब तक पूर्ण ध्यान से सम्पन्न कर सकें, तब तक अवश्य सम्पन्न करें।

मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ॐ नमो भगवते महाबल पराक्रमाय भूत-प्रेत-पिशाच ब्रह्मराक्षस शाकिनी डाकिनी यक्षिणी पूतना मारी-महामारी-राक्षस-भैरव-वेताल ग्रहराक्षसादिकान् क्षणेन हन् हन् भंजय भंजय मारय मारय शिक्षय शिक्षय महामाहेश्वररुद्रावतार ॐ हुं फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते हनुमदाख्याय रुद्राय सर्वदुष्टजनमुख स्तम्भन कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ठं ठं ठं फट् स्वाहा ॥

इसके पश्चात् उस कागज को जला कर, भस्म एक पुड़िया में बांध कर घर से दूर फेंक दें, तो साधक को कुछ ही समय में प्रत्यक्ष परिणाम प्राप्त होता है।

वस्तुतः हनुमान साधना प्रत्येक ही साधक के लिए आवश्यक साधना है, जिसको सम्पन्न करने से कभी भी किसी प्रकार का विपरीत प्रभाव नहीं मिलता, अपितु लाभ ही है, आवश्यकता केवल विश्वास और श्रद्धा की है, और विशेष तो क्या कहा जाय-यदि साधक एक बार विधि-विधान सहित हनुमान सिद्धि प्राप्त कर, प्रति मंगलवार को केवल हनुमान चालीसा का ही पाठ सम्पन्न करें-तो उसके जीवन में रोग, भय, बाधाओं तथा शत्रुओं का प्रवेश हो ही नहीं सकता।

हनुमान साधना तो एक सिद्ध महा कवच है जो कि साधक के चारों ओर एक रक्षा कवच बना देती है, और गुरु-भक्ति से साधक अपने सभी कार्यों को सरलतापूर्वक सम्पन्न करने में समर्थ रहता है।

क्या आपके घर पर तांत्रोक्त प्रभाव है, दोष है ?

यदि आपके घर में सुख शान्ति नहीं है ?
घर में हर समय कलह रहता है ?
पैसे का अभाव हर समय बना रहता है ?
आय से अधिक व्यय होता रहता है ?

तो निश्चय ही कुछ विशेष बात अवश्य है, इसका निराकरण तो आवश्यक ही है, - 'वास्तु देव' की स्थापना, पूर्ण पूजा, नवग्रह स्थापना आवश्यक है, इसी महत्वपूर्ण विषय का सम्पूर्ण विवेचन—

परिश्रम तो अपनी बुद्धि, बल, ज्ञान, शक्ति, के सामर्थ्य से हर कोई करने का प्रयास करता है, लेकिन फल कितनों को पूर्ण रूप से प्राप्त होता है, ऐसा निश्चित नहीं है, समाज का अंग होते हुए भी प्रत्येक व्यक्ति की एक अपनी अलग दुनिया होती है-जिसे उसका घर कहा जाता है, उसमें हर वस्तु, हर व्यक्ति, उससे ही जुड़ा होता है, अर्थात् उसकी पत्नी, उसकी संतान, उसके माता-पिता, उसके बहन-भाई, उसकी वस्तुएं, उसका कमरा इत्यादि इत्यादि ।

इस घर नामक स्थान के लिए ही तो व्यक्ति इतनी अधिक भाग-दौड़ करता है, यदि यह घर नहीं हो तो व्यक्ति में कार्य करने की भावना ही नहीं आ सकती है घर ही ऐसा स्थान है जो व्यक्ति को कार्य करने की प्रेरणा देता है, उसे संग्रह करने की प्रेरणा देता है, उसके हर प्रयत्न में यह इच्छा रहती है, कि उसका घर अर्थात् केवल पत्थरों का बना मकान ही नहीं अपितु जहां उसका अपना सब कुछ हो, उसमें सम्पूर्णता हो, उसे सुख और शान्ति प्राप्त हो ।

मैंने अपने जीवन में हजारों लोगों से मिलते हुए उनकी भावनाएं, इच्छाएं, उनकी कार्य-पद्धति को जाना है, उनमें से ज्यादातर अपनी घरेलु समस्याओं से ही ग्रस्त नजर आये, किसी को घर में शान्ति नहीं मिलती, कोई अपने पारिवारिक कलह से दुखी है, तो कोई अपनी पत्नी के कारण दुखी है, तो कोई अपने बच्चों के आज्ञाकारी न

होने के कारण और कोई घर में लक्ष्मी अर्थात् पैसे न होने के कारण दुखी है अर्थात् केन्द्र बिन्दु तो घर ही है, जिसके लिए वह भाग-दौड़ करता है, यदि कोई सन्यास धारण कर ले, अपने घर को छोड़ दे, घर के प्राणियों से सम्पर्क त्याग दे तो उसके लिए सुख और दुःख एक समान हो जाते हैं, लेकिन क्या ऐसा सम्भव है ? कदापि नहीं।

जीवन का यह चक्र तो चलाना ही पड़ेगा, लाखों में से एक-दो ही इस चक्र से अलग होकर एक अद्वितीय व्यक्ति बन सकते हैं लेकिन उन्होंने भी किसी न किसी घर से ही जन्म लिया होता है और उनकी यश वृद्धि से उनके घर की वृद्धि होती है।

व्यक्ति जब घर से दुखी हो जाता है तभी तो वह बाहर सुखों की तलाश में भटकता है, लेकिन क्या घर से बाहर सुख मिल सकता है ? जब व्यक्ति अपने घर को अपने अनुकूल बना कर सुख प्राप्त नहीं कर सकता है तो वह बाहर कैसे सुख प्राप्त करेगा, आखिर तो उसे लौट कर घर को आना ही पड़ता है।

घर कैसा हो

महाभारत में गीता का उपदेश देते हुए श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कहा कि— "यही तुम्हारा स्थान है, तुम्हारा घर है, इसी के लिए तुम्हें संघर्ष करना पड़ेगा, इस हेतु यह विचार मत करो कि सामने कौन है, जीतोगे या हारोगे, तुम्हें अपना स्थान, अपना घर प्राप्त करना ही है और यही तुम्हारा कर्त्तव्य है, इसी में तुम्हें सुख की अनुभूति होगी।"

घर ही एक ऐसा स्थान है, जहां सुख प्राप्त हो सकता है, यदि आपका कोई विरोधी है, तो यह आवश्यक नहीं कि वह शारीरिक वार ही आप पर करे, तन्त्र ग्रन्थों में ऐसे हजारों उल्लेख, साधनाएं—जिसमें प्रयोग दिये गये हैं कि यदि किसी व्यक्ति का सम्पूर्ण विनाश करना हो तो उसके घर की शान्ति भंग कर दो, उसके घर पर ऐसे ग्रहों का, शक्तियों का प्रहार कर दो कि उसे अपने घर में किसी प्रकार की शान्ति प्राप्त न हो, कलह का वातावरण मिले, भाई-भाई में द्वेष रहे, पति-पत्नी विपरीत विचारों के हों, बालक योग्य न हों, घर में हर समय अभाव बना रहे।

ऐसे स्थान पर रह कर कोई भी व्यक्ति चाहे वह बल, बुद्धि, चातुर्य से कितना ही परिपूर्ण हो, उन्नति नहीं कर सकता, वह कमाता है और सौ खर्च उत्पन्न हो जाते हैं, अतः हर व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है कि उसका घर श्रेष्ठ हो, घर ऐसे स्वर्ग के समान हो जहां प्रसन्नता हो, प्रेम हो, स्नेह हो, शान्ति हो, लक्ष्मी का स्थायी वास हो, देवी-देवताओं का पूजन होता हो, अतिथि आ कर प्रसन्नता अनुभव करें, लक्ष्मी की निरन्तर बढ़ोत्तरी हो, श्रेष्ठ कार्य घर में सम्पन्न होते रहें, ऐसे ही तो घर स्वर्ग समान हैं।

पर ऐसा होता क्यों नहीं

हर घर में आदर्श स्थिति नहीं हो सकती, लेकिन एक संतुलन तो बना ही रह सकता है, घर में यदि दरिद्रता, दुःख है तो धीरे-धीरे कम होने चाहिए, यदि ऐसा नहीं होता तो कहीं न कहीं कुछ कमी अवश्य है, ऐसा इसलिए होता है कि उस घर में कुछ ऐसे विपरीत ग्रहों का प्रभाव है, कुछ ऐसी आसुरी शक्तियों का प्रभाव है, जो घर की श्री वृद्धि का निरन्तर भक्षण करती रहती हैं, कुछ ऐसे तांत्रिक प्रभाव हैं, जो हर समय पीड़ा व्याधि पहुंचाते रहते हैं।

इसके निवारण के बिना उस घर की, उस परिवार की, उस वंश की सम्पूर्ण उन्नति संभव ही नहीं है, जो अपना घर नहीं सुधार सकता वह दूसरों का घर क्या सुधारेगा।

वायुमण्डल का प्रभाव

हर बात तर्क की कसौटी पर नहीं परखी जा सकती, कुछ बातें केवल अनुभव के द्वारा ही जानी जा सकती हैं, कुछ स्थानों पर व्यक्ति को विशेष मानसिक शान्ति प्राप्त होती है, और कुछ स्थानों पर एक भय लगता है, श्मशान में हर व्यक्ति जा कर नहीं बैठ सकता—क्यों ? वहां प्रेत,

वैताल, गण इत्यादि विचरण करते हैं और वे अपना दुष्प्रभाव डाल सकते हैं, जब कि मन्दिर में व्यक्ति अकेला ही सारी रात बैठ कर ध्यान कर सकता है, यही तो स्थान-स्थान का अन्तर है।

क्या आपने कभी विचार किया है कि आपका घर दूषित है या नहीं? आपके घर पर किस प्रकार के ग्रहों का प्रभाव है, खराब ग्रहों, प्रेत-प्रभाव, दुष्ट आत्माओं के निवास से घर में अशान्ति, दरिद्रता ही रहती है, आप जो निरन्तर साधना करते रहते हैं, गुरु-भक्ति करते हैं, उससे उनका प्रभाव क्षीण अवश्य हो जाता है, लेकिन जब तक घर का ही पूर्ण रूप से शुद्धिकरण न हो, श्रेष्ठ देवताओं का निवास न हो, तब तक कुछ भी उत्तम नहीं हो सकता।

वास्तु देवता की स्थापना

हर श्रेष्ठ कार्य को करने से पहले हम पूजन इत्यादि सम्पन्न करते हैं, इसी तरह सबसे आवश्यक है, कि जिस घर में रह रहे हैं, उसमें वास्तु देवता की स्थापना अवश्य करें, वास्तु देवता के सम्बन्ध में शास्त्रों में जो पौराणिक कथा मिलती है, उसके अनुसार भगवान शिव के पसीने से एक भयंकर आकृति वाला पुरुष उत्पन्न हुआ और उसने संहार करना प्रारम्भ किया, तब भगवान शंकर ने उसे शान्त कर उसके विशाल शरीर में सभी देवताओं का वास स्थिर कर दिया और यह वरदान दिया कि तुम मेरे शक्ति स्वरूप हो और हर घर में, हर मन्दिर में, हर भवन में, हर यज्ञ में, निर्माण और प्रवेश के समय तुम्हारा पूजन होगा, तुम जहां निवास करोगे वहां तुम्हारे साथ सभी ४५ देवता भी निवास करेंगे।

यह एक पौराणिक कथा है, लेकिन इसके वास्तविक महत्व को समझना आवश्यक है, वास्तु देवता की स्थापना और पूजन के द्वारा हम अपने घर में उन शक्तियों का का आह्वान कर रहे हैं,–जो कि घर की रक्षा के साथ-साथ घर की उन्नति, शान्ति के लिए आवश्यक है, इन विशिष्ट सिद्ध देवताओं के प्रभाव से किसी भी प्रकार का तांत्रिक-प्रभाव, शत्रुओं द्वारा किये जाने पर निष्फल ही रहता है।

वास्तु मण्डल देवता

वास्तु मण्डल के विधान के अनुसार इसमें मुख्य रूप से ४५ देवता स्थित हैं, जो निम्नलिखित हैं—

१-शिखी, २-पर्जन्य, ३-जयन्त, ४-कुलिशायुध, ५-सूर्य, ६-सत्यल, ७-भृश, ८-आकाश, ९-वायु, १०-पूषा, ११-वितथ, १२-गृहक्षत, १३-यम, १४-गन्धर्व, १५-भृंगराज, १६-मृग, १७-पितृ, १८-दौवारिक, १९-सुग्रीव, २०-पुष्पदन्त, २१-वरुण, २२-असुर, २३-शेष, २४-पापहर, २५-रोगहर, २६-अहि, २७-मुख्य, २८-भल्लाट, २९-सोम, ३०-सर्प, ३१-अदिति, ३२-दिति, ३३-अप्, ३४-अपवत्स, ३५-अर्यमा, ३६-सावित्र, ३७-सविता, ३८-विवस्वान् ३९-विबुधाधिप, ४०-जयन्त, ४१-मित्र, ४२-राजयक्ष्मा, ४३-रुद्र, ४४-पृथ्वीधर तथा ४५-ब्रह्मा।

वास्तु देव पूजा मुहूर्त

वास्तु देवता की पूजा किसी भी शुभ दिन प्रारम्भ की जा सकती है, यदि रवि पुष्य योग हो तो उस दिन पूजन का महत्व विशेष रूप से बढ़ जाता है।

आने वाले समय में २-१-१९९१ को सूर्योदय से रात्रि को २ बजे तक, ३०-१-९१ को सूर्योदय से दिन को ११ बजे तक, तथा २६-२-९१ को सूर्योदय से शाम को ६ बजे तक रवि पुष्य योग होने के कारण अत्यन्त शुभ मुहूर्त हैं, इस समय वास्तु देव स्थापना एवं पूजन करना चाहिए।

वास्तु देव सम्पूर्ण पूजा विधान

पूजन के दिन प्रातः सूर्योदय से पूर्व ही उठ कर पूरा घर साफ कर धो देना चाहिए, घर की सफाई शुद्ध रूप से की हुई होनी चाहिए, जिस घर में अशुद्धि, कचरा,

मकड़ी के जाले इत्यादि होते हैं–वहां कभी भी लक्ष्मी का वास नहीं हो सकता, अपने घर में पूजा स्थान पर अथवा बीच आंगन में यह पूजा सम्पन्न कर सकते हैं।

इस पूजा में मुख्य रूप से मन्त्र सिद्ध "वास्तु देव यंत्र" "वास्तु देव मूर्ति" तथा "६४ वास्तु चक्र" आवश्यक है।

अपने सामने एक बड़े श्वेत वस्त्र पर वास्तु मण्डल चक्र बनाएं, इस चक्र में ६४ चौकोर खाने चावलों से बनाते हुए प्रत्येक खाने में एक-एक वास्तु चक्र तथा बीचों-बीच वास्तु यन्त्र तथा वास्तु मूर्ति स्थापित करें, इसके साथ एक कलश में शुद्ध जल भर कर ऊपर नारियल रखें और इस जल कलश को वास्तु यन्त्र के सामने उसी खाने में स्थापित करें, वास्तु चक्र के बाहर पूर्व तथा पश्चिम दिशा में नौ-नौ रेखाएं खींचें, और उत्तर-दक्षिण दिशा में भी नौ-नौ रेखाएं खींचें, तथा साधक का मुंह पूर्व दिशा की ओर होना चाहिए, ये नौ-नौ रेखाएं "रेखा देवियां" हैं, पूर्व तथा पश्चिम की देवियों के नाम निम्न प्रकार से हैं –

१-लक्ष्मी, २-यशोवती, ३-कान्ता, ४-सुप्रिया, ५-विमला, ६-श्री सुभगा, ७-सुमति, ८-श्री, ९-इड़ा।

उत्तर तथा दक्षिण दिशा की देवियां निम्न हैं—

१-धन्या, २-प्राणा, ३-विशाला, ४-स्थिरा, ५-भद्रा, ६-स्वाहा, ७-नया, ८-निशा तथा ९-विरजा।

सर्वप्रथम वास्तु देव का आह्वान करें।

ध्यान मन्त्र

वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान् त्स्वावेशो
अनमीवो भवानः।
यत् त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं
चतुष्पदे॥

वास्तु देवता पर सिन्दूर, पुष्प-माला तथा जल अर्पित करें, और अपने घर में स्थायी रूप से निवास करने का आह्वान करें।

इसके पश्चात् 'रेखा देवियों' का पूजन करते हुए प्रत्येक रेखा देवी एवं वास्तु चक्र पर चावल और कुंकुम चढ़ाएं तथा नमस्कार करें—

सर्वप्रथम पूर्व तथा पश्चिम दिशा में स्थापित देवियों का पूजन करें —

ॐ लक्ष्मी नमः, ॐ यशोवती नमः, ॐ कान्ता नमः, ॐ सुप्रिया नमः, ॐ विमला नमः, ॐ श्री सुभगा नमः, ॐ सुमति नमः, ॐ श्री नमः, ॐ इड़ा नमः।

इसके बाद उत्तर तथा दक्षिण दिशा में स्थापित रेखा देवियों का पूजन सम्पन्न करें—

ॐ धान्या नमः, ॐ प्राणा नमः, ॐ विशाला नमः, ॐ स्थिरा नमः, ॐ भद्रा नमः, ॐ स्वाहा नमः, ॐ नया नमः, ॐ निशा नमः, ॐ विजा नमः।

प्रत्येक बार बीच में स्थित जल भरे कलश से एक पीपल के पत्ते से जल लेते हुए प्रत्येक देवी पर जल छिड़कें।

इसके पश्चात् वास्तु चक्र में स्थित ४५ देवताओं का पूजन करें, इनका पूजन भी ऊपर दी गई विधि के अनुसार ही सम्पन्न किया जायेगा, जब सभी ४५ देवताओं का पूजन सम्पन्न हो जाय तो अपने हाथ में चावल ले कर उसमें थोड़ा सिन्दूर मिला कर चारों दिशाओं में तथा आकाश की ओर दाएं हाथ से वास्तु देव का ध्यान करते हुए फेंकें, पूजन के समय वास्तु देवता के समक्ष गुड़ इत्यादि प्रसाद अवश्य रखना चाहिए, इसके पश्चात् किसी भी माला से वास्तु देवता का ११ माला मन्त्र जप अवश्य सम्पन्न करना चाहिए।

वास्तु देवता मन्त्र

ॐ नमो नारायणाय वास्तु रूपाय भूर्भुवस्य
पतये भूपतित्व मे देहि ददापय स्वाहा॥

६४ वास्तु चक्रों के पूजन के पश्चात् दूसरे दिन श्रेष्ठ जल धारा में समर्पित कर दें।

इस दिन पूजन के पश्चात् ब्राह्मण भोजन करा कर स्वयं सायंकाल भोजन करना चाहिए, सम्पूर्ण पूजन के समय मन में प्रसन्नता, कर्तव्य भावना, श्रद्धा अवश्य होनी चाहिए, श्रद्धा के बिना साधना में सफलता प्राप्त नहीं होती है।

इस साधना के बारे में, इस पूजन के बारे में इतना ही लिखना काफी है कि यदि घर पर किसी भी प्रकार का तांत्रिक प्रभाव किया हो, अथवा घर में निरन्तर बीमारी अशान्ति, बाधा, अभाव रहता हो–तो वास्तु देवता स्थापना पूजा से सम्पूर्ण शान्ति एवं सिद्धि प्राप्त होती है।

वह घर सौभाग्यशाली है

जिस घर में

पूज्य गुरुदेव की वाणी गुंजरित होती हो

वास्तव में ही यह कितने सौभाग्य की बात होती है, जब हम अपने घर में पूज्य गुरुदेव को बुलाते हैं, हम उन्हें देख सकते हैं, उनसे बातचीत कर सकते हैं और उनके मुंह से निकले हुए प्रवचनों का आनन्द ले सकते हैं।

हमने प्रयत्न किया है कि श्रेष्ठ स्तर की तकनीक से वीडियो कैसेट और आडियो कैसेट बनाई जाय, और हमने कुछ विशेष मशीनें मंगा कर ऐसा ही किया है, भव्यता, सुन्दरता और प्रभाव की दृष्टि से ये सभी कैसेटें अद्वितीय हैं।

और फिर एक-एक कैसेट में अद्भुत एवं आश्चर्यजनक ज्ञान भरा हुआ है, ये कैसेटें आपके लिए तो उपयोगी हैं ही, आपके आस-पड़ौस के लोगों, मित्रों, सम्बन्धियों और परिचितों के लिए भी उपयोगी हैं, मन्दिर के पुजारियों, पण्डितों और साधुओं के लिए भी लाभदायक हैं, यदि कोई कैसेट ऐसे किसी धर्मपरायण व्यक्ति को उपहार के रूप में देता है, तो वह आपके लिए कृतज्ञता अनुभव करेगा।

और फिर यह ज्ञान तो आपके और आपकी पीढ़ियों के लिए भी यादगार रहेगा, आप स्वयं देखेंगे, कि हमने एक-एक कैसेट को हीरे की तरह तराश कर सुन्दर, आकर्षक और दोष रहित बनाया है।

और फिर आपको ये कैसेटें दे रहे हैं बिना व्यापारिक स्वार्थ के, बाजार में खाली आडियो कैसेट २१)रु० में मिलती है, उसी मूल्य में श्रेष्ठ साहित्य और प्रवचनों से सम्पन्न कर ये कैसेट आपको भेज रहे हैं। खाली वीडियो कैसेट का बाजार मूल्य–१८०)रु० है, और हम १८०)रु० में ही श्रेष्ठ ज्ञान से सम्पन्न कर, इसे आपके हाथों में सौंपने की व्यवस्था करते हैं, अब तो कोई अभागा ही होगा जो इस कैसेट को प्राप्त न करता हो।

आडियो कैसेट जो आपके घर में आने के लिए मचल रही हैं

१- गुरु गीता
२- सिद्धाश्रम
३- स्वामी सच्चिदानंद जी
४- प्रेम धार तलवार की
५- प्रेम न हाट बिकाय
६- घूंघट के पट खोल री
७- कुण्डलिनी नाद ब्रह्म
८- सिद्धाश्रम प्रश्नोत्तर
९- गुरु मोरी जीवन प्रेम आधार
१०- सूली ऊपर सेज पिया की
११- शिव पूजन
१२- शिव सूत्र
१३- पारदेश्वर शिवलिंग एवं रसेश्वरी दीक्षा
१४- ध्यान योग
१५- कुण्डलिनी योग
१६- महालक्ष्मी साधना
१७- विशेष दीपावली साधना
१८- चामुण्डा दीक्षा
१९- सतोपथी दीक्षा
२०- शक्तिपात दीक्षा
२१- विशेष लामा मंत्र
२२- महाकुंभ (चार भाग १९८९)
२३- लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग (तीन भाग)
२४- स्वर्ण देहा अप्सरा साधना (२ भाग)
२५- अक्षय पात्र साधना
२६- गुरु पादुका पूजन
२७- पाशुपतास्त्रेय प्रयोग (३ भाग)
२८- काया कल्प
२९- षोडश अप्सरा साधना
३०- कुबेर पति शिव शक्ति साधना
३१- गुरु पूर्णिमा ओंकारेश्वर शिविर १९९० (४ भाग)
३२- १०८ कुं० गणेश गायत्री महायज्ञ एवं शिविर (३ भाग)
३३- १०८ कुं० हनुमान लक्ष्मी महायज्ञ (२ भाग)
३४- गुरु पूर्णिमा चित्रकूट सिद्धेश्वरी पूजन एवं १०८ कुं० यज्ञ (५ भाग)
३५- क्रिया योग (५ भाग)
३६- शत अष्टोत्तरी सिद्ध शक्तिपीठ साधना (४ भाग)
३७- चैत्र नवरात्रि १९९० (८ भाग)
३८- जन्म दिवस १९९० (५ भाग)
३९- अमृत महोत्सव १९८९ (३ भाग)
४०- परा विज्ञान
४१- पारद विज्ञान
४२- अणिमा सिद्धि
४३- सिद्धाश्रम महात्म्य
४४- ऋण हर्ता लक्ष्मी प्रयोग—प्रथम
४५- " " —द्वितीय
४६- मैं गर्भस्थ बालक को चेतना देता हूं (२ भाग)
४७- ॐ मणि पद्मे हुं
४८- समाधि के सात द्वार
४९- साधना सूत्र
५०- ध्यान धारणा और समाधि
५१- तन्त्र रहस्यम्
५२- मृत्योर्मा अमृतं गमय
५३- शिष्योपनिषद्
५४- दुर्लभोपनिषद्
५५- कठोपनिषद्
५६- गुरु हमारो गोत्र है
५७- प्रेम पंथ अति कठिन है
५८- पिव बिन बुझे न प्यास
५९- अकथ कहानी प्रीत की
६०- अष्ट सिद्धि

६१- लघिमा साधना
६२- सन्ध्या आरती
६३- दुर्लभ गुरु भजन नं० १ से १४ तक
४- विरहिन दियरा जोवें बाट
६५- मैं तो गुरुदेव रंगराती
६६- चल हंसा वा देश
६७- पुरब जनम री प्रीत पुरानी
६८- मां भगवती जगदम्बे शत् शत् वन्दन
६९- महालक्ष्मी स्वरूप साधना
७०- महाकाली स्वरूप साधना
७१- महासरस्वती साधना
७२- लक्ष्मी साधना
७३- क्रिया योग
७४- सूर्य सिद्धान्त

वीडियो कैसेट जो आपके जीवन का सौभाग्य है

१- सिद्धाश्रम
२- कुण्डलिनी
३- स्वर्णदेहा अप्सरा
४- लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग
५- पाशुपतास्त्रेय प्रयोग
६- शिव पूजन
७- नवरात्रि-८६
८- चैत्र नवरात्री-१६६० (२ भाग)
९- अमृत महोत्सव १६६० (२ भाग)
१०- गुरु पर्व-१६६० (२ भाग)
११- अहोभाव महोत्सव नवरात्रि-१६६० (२ भाग)
१२- महाकुम्भ-१६८६
१३- अक्षय पात्र साधना
१४- मुजफ्फरनगर शिविर-१६६०
१५- मैं गर्भस्थ बालक को चेतना देता हूं
१६- अजानी पगडंडियों पर गुरुदेव जी के साथ
१७- कुण्डलिनी जागरण की झलक
१८- तन्त्र के गोपनीय रहस्य
१९- १०८ कु० यज्ञ एवं शिविर (चित्रकूट)
२०- ब्रह्माण्ड की यात्राएं
२१- सूर्य सिद्धान्त
२२- क्रिया योग
२३- साधना : सिद्धि एवं सफलता
२४- लक्ष्मी मेरी चेरी
२५- हंसा उड़हु गगन की ओर
२६- पिय बिन बैरण काली रात
२७- उठ, पनिहार चलहुं नदिया तट
२८- गुरु रहस्य

नोट—उपरोक्त कैसेटों के जो मूल्य लिखे हैं, वे नये वर्ष के अवसर पर रियायती मूल्य हैं और ३१ जनवरी तक जिनका आदेश प्राप्त हो जायेगा, उसी को इस रियायती मूल्य पर कैसेट डाक खर्च लगा कर भेजने की व्यवस्था होगी।

आप अग्रिम धनराशि मत भेजिये, केवल नीचे दिया हुआ प्रपत्र भर कर हमें भेज दीजिये, हम वी०पी० से आपको ये कैसेटें भेजने की व्यवस्था कर रहे हैं, जिससे कि आपके हाथों में सुरक्षित रूप से ये कैसेटें पहुंचाई जा सकें।

गारन्टी

यदि आपको कोई कैसेट पसन्द न आवे तो कैसेट प्राप्ति के एक महीने के भीतर-भीतर कैसेट सुरक्षित रूप से हमें भेज कर संबंधित धनराशि वापिस प्राप्त कर सकते हैं, यह हमारी विश्वसनीयता का प्रमाण है।

: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राज०)

प्रपत्र

कृपया रियायती मूल्य पर हमें वी. पी. से निम्नलिखित कैसेट भेज दें, वी. पी. आने पर मैं छुड़ाने का वायदा करता हूं—

आडियो कैसेट	वीडियो कैसेट
१	१
२	२
३	३
४	४
५	५
६	६
७	७
८	८
९	९
१०	१०

मेरा नाम.. मेरी सदस्यता संख्या..........

मेरा पूरा पता..

....

विशेष

अपनों से अपनी बात

जीवन का मूलभूत आधार शक्ति ही है, यह शक्ति अपने विभिन्न स्वरूपों में आप सब के भीतर प्रवाहित हो कर जाग्रत करती है, आपके जीवन को चलाती है, यह शक्ति-तत्व किसी में कम जाग्रत हो सकता है और किसी में अधिक, इसीलिए तो कोई व्यक्ति अपने जीवन में अधिक सफलता प्राप्त कर लेता है, और कोई पिछड़ा ही रह जाता है।

शक्ति का स्फुरण

शक्ति आपके भीतर आपके अज्ञान के कारण, आपके दोषों के कारण, इस जन्मकृत और पूर्व जन्मकृत दोषों के कारण, सही मार्गदर्शन न मिलने के कारण छिपी हुई है, एक प्रकार से राख के ढेर में अंगारे के समान दबी हुई है, यदि समय पर इस राख को हटाकर शक्ति-तत्व को जाग्रत नहीं किया गया तो यह शक्ति-तत्व भी धीरे-धीरे राख बन जायेगा।

शक्ति-तत्व जाग्रत करने का एक मात्र उपाय साधना-उपासना ही है, साधना द्वारा शक्ति को हम आह्वान कर अपने आंतरिक शक्ति-तत्व को जोड़ देते हैं- जिससे शक्ति के आदि स्रोत से प्रवाह अपने भीतर प्रारम्भ हो जाय, और निरन्तर उपासना द्वारा प्रक्रिया को जारी रखते हैं।

शक्ति–स्वरूप

शक्ति को आप किस रूप में अपने भीतर प्राप्त करना चाहते हैं, यह ज्ञात करना अत्यन्त आवश्यक है, शारीरिक शक्ति, मानसिक शक्ति, धन शक्ति, व्यक्तित्व शक्ति, आकर्षण शक्ति के अलावा भी शक्ति के कई स्वरूप हैं, और इसका विकास आपको अपने भीतर ही करना है, रोग, शोक, दुःख व्यक्ति के प्रारब्ध में लिखे होते हैं, लेकिन इस भाग्य को, इस प्रारब्ध को भी शक्ति के विकास द्वारा, साधना-उपासना द्वारा बदला जा सकता है, अपने आप से जीवन की बाधाओं को दूर किया जा सकता है।

इसके लिए न तो उम्र का बन्धन है और न ही शिक्षा का, और न ही आपके स्त्री या पुरुष होने का बन्धन है, यह तो एक ऐसी सतत् क्रिया है, जिसे आपको प्रारम्भ न केवल अपने लिए करना है बल्कि आपको जिन उद्देश्यों के लिए जीवन प्राप्त हुआ है- उसे पूरा करने के लिए भी इस शक्ति-तत्व को जाग्रत करना ही है, केवल आवश्यकता है–अपने भीतर कुछ करने की, कुछ आगे बढ़ने की, जीवन में कुछ प्राप्त करने की, सम्पूर्णता प्राप्त करने की, अदम्य लालसा को अपने भीतर प्रवाहित करने की।

साधना उपासना विशेषांक

ग्रन्थ तो हमारे प्राचीन ऋषियों ने बहुत लिखे, अपने ज्ञान को इस स्वरूप में जाग्रत किया, कि हर व्यक्ति पढ़ कर कुछ कर सके, और अपने जीवन-स्तर का उत्थान कर सके, उन्होंने अपने जीवन में जो कुछ देखा, पाया उसे अपने ग्रन्थों में लिखा–चाहे वह योग-विद्या हो, देव-विद्या हो, लक्ष्मी-साधना हो, अथवा वशीकरण साधना या

आयुर्वेद-साधना, उन्होंने कुछ भी नहीं छिपाया, लेकिन साधकों की विचारधारा, समय क्रम के दूषित होने से व संस्कृति के प्रभाव से बदल गई, और इसी कारण आज हम सब के सामने रोग, शोक, दुःख, मानसिक चिन्ताएं आदि का सागर है।

इन सब स्थितियों की विवेचना करते हुए पूज्य गुरुदेव ने अपने प्रवचनों में यही कहा कि "हे मेरे शिष्य ! पूरे ब्रह्माण्ड को कह दो कि हमें भक्ति नहीं साधना चाहिए" **और इसी के माध्यम से शक्ति-तत्व को हमें अपने भीतर जाग्रत करना है,** इसीलिए पूज्य गुरुदेव ने साधना के स्वरूप को, शक्ति के स्वरूप को सरलतम रूप से स्पष्ट करते हुए, इस गूढ़ ज्ञान को सम्पूर्ण रूप से व्याख्या करते हुए जो दिव्य ज्ञान दिया है, उसी का **साकार स्वरूप यह अद्वितीय** "साधना उपासना विशेषांक" है।

यह विशेषांक कितना अधिक महत्वपूर्ण है, इसका पूरा ज्ञान तो आप पढ़ कर ही कर सकेंगे, लेकिन इतना अवश्य कहा जा सकता है, कि यदि शिव की जटाओं में गंगा समाहित हो सकती है, तो इस विशेषांक में ज्ञान, साधना, शक्ति की अद्भुत गंगा समाहित हुई है।

हे, साधक अब तो चेत

छोटी-छोटी बातों में, छोटे-छोटे क्रिया-कलापों में जीवन का आनन्द लेने से वंचित हो जाएंगे, समय पर किये हुए कार्य की ही उपयोगिता है, कुछ कारणों से, कुछ आलस्य, कुछ भूल वश आपने हो सकता है अपनी सदस्यता का अब तक नवीनीकरण नहीं करवाया हो, तो क्या यह उचित है ?

जब एक बार आप पूज्य गुरुदेव से जुड़ जाते हैं, तो हमारे पत्रिका कार्यालय का यह कर्तव्य हो जाता है, कि आपको पूज्य गुरुदेव के ज्ञान का, शक्ति भण्डार का लाभ निरन्तर प्राप्त होता रहे, इसीलिए हम आपको बार-बार लिखते हैं।

पत्रिका कार्यालय आपका ही है

पत्रिका कार्यालय में अपनी सेवाएं प्रदान करने वाले, कार्य करने वाले आपमें से ही साधक भाई हैं, और कई बार कार्य की व्यस्तता की वजह से कुछ गलतियां होनी स्वाभाविक हैं, हो सकता है डाक व्यवस्था के कारण आपको कोई महीने का अंक न मिला हो, हो सकता है आपको आपके किसी पत्र का सन्तोषप्रद उत्तर नहीं मिला हो, तो आपको अपना ही कार्यालय समझ कर विचार करना है, जहां तक संभव हो सकता है, चाहे किसी की भी भूल के कारण, डाक में पत्रिका की गड़बड़ी होने के कारण आपको पत्रिका न मिलने पर हम दूसरा अंक अतिरिक्त व्यय सहन कर भेज देते हैं, इसके उपरान्त भी यदि आपको किसी प्रकार की कोई शिकायत हो—तो आप हमें बिना संकोच लिख सकते हैं, अपनों से कैसा संकोच, आप हमें बार-बार सुझाव दें, किसी भी संस्था के पूर्ण विकास के लिए सब लोगों का सहयोग आवश्यक होता है।

पूज्य गुरुदेव तो इतने व्यस्त रहते हैं, कि छोटी-छोटी बातों के लिए उनको कहना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं लगता है।

पत्रिका सदस्यता का नवीनीकरण करा कर, और इसकी सदस्यता का विस्तार कर आप एक महान पुण्य कार्य में सहभागी बन रहे हैं, समाज की चेतना का विकास करने में आपका यह सहयोग आने वाली पीढ़ियां अवश्य ही याद करेंगी। ●

सामग्री, जो आपकी साधनाओं में सहायक हैं

साधनाओं में सफलता प्राप्ति हेतु, पूर्ण चैतन्य, मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त, प्रामाणिक सामग्री अनिवार्य है, इस अंक में जिन साधनाओं का उल्लेख दिया गया है, उनसे संबंधित सामग्री निम्नवत् है, आप केवल पत्र द्वारा हमें सूचित कर दें, आपको डाक व्यय सहित वी०पी० द्वारा यह सामग्री भेजने की व्यवस्था की जायेगी, जिससे यह आपको सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके ।

साधना प्रयोग	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्यौछावर
सौन्दर्योपासना सिद्धि	२	सौन्दर्योपासना दुर्लभ यन्त्र सौन्दर्य माला वैजयन्ती सिद्धि गुटिका	पैकेट–१५०)रु०
स्वयंवरा अप्सरा साधना	४	स्वयंवरा अप्सरा यन्त्र-चित्र स्वयंवरा अप्सरा माला	पैकेट–१५०)रु०
सूर्य साधना से सप्त सिद्धियां	६	चक्षुष्मती यन्त्र	१२१)रु०
		मणिमाला	१२०)रु०
		सूर्य चित्र	१०)रु०
स्वर्णाकर्षण भैरव प्रयोग	१३	स्वर्णाकर्षण भैरव गुटिका	१५०)रु०
		१०८ भैरव शक्ति बीज	१०८)रु०
		रुद्राक्ष माला	३००)रु०
कालरात्रि साधना	१७	काली यन्त्र	१५०)रु०
		महामोहन यन्त्र	७५)रु०
		११ गोमती चक्र	६०)रु०
		२ तांत्रोक्त फल	६०)रु०
		विद्युत माला	३००)रु०
कौमारी तन्त्र साधना	२१	कौमारी यन्त्र-चित्र	१५०)रु०
		नीलाश्म माला	२४०)रु०
हनुमान साधना	२५	हनुमान यन्त्र	१२०)रु०
		हनुमान गुटिका	१०१)रु०
		मूंगा माला	६०)रु०
तन्त्र निवारण प्रयोग	२६	वास्तु देव यन्त्र	२२०)रु०
		वास्तु देव चित्र	२१)रु०
		६४ वास्तु चक्र	१५१)रु०
कवर पेज २-३		१२ सूर्य संक्रान्ति चक्र	१२१)रु०
		सूर्य कंकण (सिद्ध कड़ा)	२५१)रु०

महाशिवरात्रि के अवसर पर

ॐ हर हर हर महादेव

भगवान पशुपतिनाथ की नगरी, नेपाल की राजधानी

काठमाण्डू में

(११-१२-१३ फरवरी १९९१ को)

शिव लक्ष्मी साधना शिविर

सम्पूर्ण जीवन को जगमगाहट प्रदान करने वाला भव्य शिविर

नेपाल तो भगवान शिव की तपस्यास्थली रहा है, भगवान शिव की क्रीड़ा स्थली रहा है, और भगवान शिव की वरदायक स्थली रहा है, यहां के कण-कण में भगवान शिव साक्षात् देह स्वरूप में भगवती पार्वती के साथ नित्य रमण करते रहते हैं, यहां के प्रत्येक क्षण में भगवान शिव के शरीर से स्पर्श होती हुई हवा अनुभव होती है, यहां के जमीन के चप्पे-चप्पे पर भगवान शिव और गौरी के कदमों की आहट स्पष्ट सुनाई देती है।

नेपाल

हिन्दू राष्ट्र की राजधानी काठमाण्डू, ऊंची-ऊंची पर्वत चोटियों से घिरी हुई, दुल्हन की तरह सजी हुई नगरी काठमाण्डू, बाबा पशुपतिनाथ की तपस्या से आपूरित शहर काठमाण्डू, उच्चकोटि के साधुओं, संन्यासियों, योगियों की लीलास्थली काठमाण्डू, असली रुद्राक्ष के पेड़ों से आच्छादित, हरी-भरी प्रकृति के गोद में बसी हुई नगरी काठमाण्डू, संसार के वास्तविक सौन्दर्य से आपूरित शहर काठमाण्डू, और तांत्रिकों का गढ़-दक्षिण काली महातीर्थ की पुण्य स्थली काठमाण्डू, जो अपने अंक में हजारों-हजारों विशेषताएं समेटे हुए है, जहां और आधुनिकता और नेपाल की प्राचीनता का अद्भुत अद्वितीय समन्वय है, और जहां प्रति क्षण स्वर गुंजरित होते रहते हैं—बाबा पशुपतिनाथ की जय—हर हर महादेव—जय जय शम्भो—।

"हिमवत् खण्ड" में पशुपतिनाथ की नगरी के बारे में लिखा है—

सकृदपि नमनं गत्वा, तत्पुरे पशुपं प्रभुम्।
सर्वपुण्यफलं लब्ध्वा विमुक्तः पशुयोनितः॥

अर्थात् श्री पशुपतिनाथ का उनकी नगरी में दर्शन

करने से व्यक्ति सभी प्रकार के पुण्यों का भागी बनता है, और पशु योनि से मुक्ति पा जाता है।

पशुपतिनाथ धाम

नेपाल की राजधानी काठमाण्डू है, जहां पैगोडा शैली के पारम्परिक मकान हैं, जो अत्यन्त सुन्दर दिखाई देते हैं और मन में हिन्दुत्व की एक लहर पैदा करते हैं, वहीं दूसरी ओर इसका मुख्य बाजार "नया बाजार" आधुनिकतम सामग्री से अटा हुआ पड़ा है, इलेक्ट्रिक, पहिनने के कपड़े और अन्य आधुनिक विलास की वस्तुएं जो जापान, सिंगापुर, हांगकांग, अमेरिका या इंग्लैण्ड में भी मुश्किल से मिलती हैं, वे यहां की दुकानों में बिखरी हुई पड़ी हैं, और नेपाल का बाजार फ्री पोर्ट होने के कारण ये वस्तुएं इतनी अधिक सस्ती हैं, कि एकबारगी तो सुन कर विश्वास ही नहीं होता।

काठमाण्डू शहर के पूर्वी ओर पर पशुपति नाथ का पैगोडा शैली में बना हुआ अद्वितीय विशाल मन्दिर है, जो नेपाल की संस्कृति की अनुभूति तो कराता ही है, हजारों-हजारों श्रद्धालुओं और भक्तों के हृदय में भी भक्ति की हिलोर पैदा करता है, और "हर हर महादेव" के गुंजरित स्वरों के साथ इस बात का अहसास करा देता है, कि यह नगरी वास्तव में ही देखने लायक है, जो अपने जीवन में पशुपति नाथ के दर्शन नहीं कर पाता, वह वास्तव में ही अभागा ही है।

पशुपति नाथ का मन्दिर अत्यन्त विशाल भव्य और दर्शनीय है, इसका मुख्य द्वार हृदय को सहज ही आकर्षित करने वाला है, प्रवेश द्वार के भीतर सामने पशुपति नाथ का वाहन विशाल नन्दी स्वर्णिम आभाओं से युक्त अपनी विशेष मुद्रा में पूर्व की ओर मुंह किये पशुपति नाथ को अनवरत निहारता है, और सामने ही एक मीटर से भी ज्यादा लंबे काले पत्थर में समाये हुए, पंचमुखी पशुपति नाथ सम्पूर्ण विश्व पर अपने स्नेह और आशीर्वाद की वर्षा करते हुए से प्रतीत होते हैं, इनके दर्शन अपने आप में इतने भव्य और अद्वितीय हैं, कि सारा शरीर एक बारगी ही भक्ति और श्रद्धा से भर जाता है और इनकी अपलक मूर्ति को निहारते रहने पर भी हृदय नहीं भरता।

पशुपति नाथ का शिवलिंग पंचमुखा है, चार दिशाओं में चार मुख हैं, जिसमें वे चारों धामों को अपनी तपस्या से आपूरित करते रहते हैं, पूर्व की ओर जगन्नाथ पुरी पश्चिम में द्वारिका धीश, उत्तर में बद्री केदार और दक्षिण में रामेश्वरम् और बीच में ऊपर की ओर निर्गुण निराकार योगियों में ब्रह्म स्वरूप, परब्रह्म शिव रूपी-स्वयं बाबा पशुपति नाथ ....

> नराकार ओंकारमूलं तुरीयं
> गिरा ज्ञान गोतीत मीशं गिरीशं ॥
> निराकं महाकाल कालं कृपालं
> गुणागार संसार पारं नतोहं ॥

पशुपति नाथ लिंग के चारों मुंह की ओर चार द्वार हैं, श्रद्धालु भक्त, योगी-यती, सन्यासी इन्हीं चारों द्वारों से पशुपति नाथ की अर्चना करते हैं, शिवलिंग छूने की अनुमति किसी को भी नहीं है, पुजारियों द्वारा ही श्रद्धालुओं की पूजा-अर्चना स्वीकार कर पशुपति नाथ को समर्पित की जाती है।

अद्वितीय शिवलिंग

भगवान पशुपति नाथ का यह शिवलिंग अपने आप में अद्वितीय है, एक मीटर से भी ज्यादा ऊंचे काले पारस पत्थर से निर्मित शिवलिंग की चमक अद्वितीय है, इस शिवलिंग पर आठों श्री यन्त्र पूर्णता के साथ अंकित हैं, जिससे यह अपने आप में तन्त्रमय शिवलिंग बन गया है, इसके दर्शन करने से ही स्वतः लक्ष्मी प्राप्त हो जाती है, "लक्ष्मी पुराण" में भगवती लक्ष्मी ने स्वयं कहा है—

आठ प्रकार से उत्कीर्ण श्री यन्त्र से मैं भगवान पशुपति नाथ के चरणों में स्थित हूं, और जो भी बाबा के दर्शन करता है, मैं उसके घर में स्थायी

रूप से निवास करती हूं।"

कहते हैं, कि यह शिवलिंग पारस पत्थर से निर्मित है, और यदि इससे लोहा स्पर्श करा दिया जाय तो वह स्वर्ण में परिवर्तित हो जाता है, इसीलिए पुजारियों को पूर्ण रूप से मनाही है कि मन्दिर के अन्दर लोहे की बनी कोई वस्तु न ले जायें।

इस शिवलिंग की एक और विशेषता है, यदि शिव लिंग के पूर्वी मुंह की ओर बैठकर, अपलक एकटक शिवलिंग को देखें, या उस पर त्राटक करें तो शिवलिंग में से चिनगारियां निकलती हुई प्रतीत होती हैं, और उसमें आंखों की ज्योति बढ़ जाती है, मोतिया बिन्द समाप्त हो जाता है, और नेत्रों की ज्योति बढ़ जाती है।

इस शिवलिंग पर महीन-महीन अक्षरों में सैकड़ों मन्त्र अंकित हैं, जो कई हजार वर्ष पहले स्वतः निर्मित हैं, यदि सूक्ष्म दर्शन यन्त्र से देखा जाय तो इतने उच्चकोटि के मंत्र और प्रयोग इस शिवलिंग पर अंकित हैं, कि जिन्हें अपने आप में अद्वितीय कहा जा सकता है, एक-एक प्रयोग अपने आप में हीरक खण्ड की तरह मूल्यवान है।

वास्तव में ही अपने जीवन में एक बार ऐसे अद्भुत अनिर्वचनीय शिवलिंग के दर्शन, जीवन का सौभाग्य ही कहा जा सकता है।

वाणी शुद्ध करने वाली वागमती नदी

पशुपति नाथ मंदिर के पीछे ही एक अत्यन्त सुन्दर नदी बहती है, जिसे 'वागमती' कहा गया है, इसका तात्पर्य है, "वाणी शुद्ध करने वाली नदी" अर्थात् जो एक बार भी इसका जल पी लेता है, उसकी वाणी स्वच्छ तथा निर्मल हो जाती है, और इस नदी में स्नान करने से भवसागर से मुक्ति अवश्य हो जाती है।

अन्य दर्शनीय स्थल

नेपाल में दस हजार से भी ज्यादा दर्शनीय स्थल हैं, और प्रत्येक स्थान अपने आप में अद्वितीय है, यहां प्रकृति पूर्ण शृंगार किये हुए दिखाई देती है, ऊंचे-ऊंचे पर्वत, पर्वतों पर हरी साड़ी पहनी थिरकती हुई प्रकृति, बहते हुए झरने, गुनगुनाहट करती हुई नदियां, और बर्फ से ढके हुए पर्वत शिखर अपने आप में भव्य और अद्वितीय हैं।

इसके अलावा मन्दिर से थोड़ी ही दूरी पर "किरातिनी मन्दिर" है, जो श्रेष्ठ तांत्रिक मन्दिर है, जहां भगवान शिव ने स्वयं भील का वेश धारण कर किरातिनी (भीलनी) पर मुग्ध होकर उसे दर्शन दिये, यहां पर जो स्त्री शिव-गौरी की पूजा करती है, उसका प्रेम और पति सुख आजीवन अखंडित रहता है।

[illegible] पर "किरात मन्दिर" है, आगे चल कर बूढ़ा नीलकण्ठ मन्दिर जो अपने आप में विश्व विख्यात है, काठमाण्डू से २१ किलोमीटर दूर घनी प्रकृति के बीच दक्षिण काली का मन्दिर है, जो तंत्र के क्षेत्र में विश्व विख्यात है, और यहां पर मस्त-मस्त विचरण करते हुए साधु, सन्यासी, योगी, यति, लामा, तांत्रिक और उच्च स्तरीय तंत्र ज्ञाता देखने को मिल जाएंगे, जो क्षण-क्षण चमत्कार करते रहते हैं।

पशुपतिनाथ मन्दिर में शिवलिंग पर आठों प्रकार के श्रीयन्त्र अंकित हैं, और यहीं पर एकमुखी रुद्राक्ष, नागमणि, पत्थर मणि, मण्डोक मणि, चिन्तामणि, गजमुक्ता मणि, मत्स्य मणि आदि दुर्लभ पदार्थ आसानी से प्राप्त हो जाते हैं। जब साधक "ॐ नमः शिवाय" मन्त्र का जप करता हुआ, मन्दिर में पहुंचता है, तो वह आनन्द-विभोर होकर कैलाश में रमण करने योग्य बन जाता है।

शिव लक्ष्मी साधना शिविर

हमने १९९१ का वर्ष का प्रारम्भ काठमाण्डू में "शिव लक्ष्मी साधना शिविर" से प्रारम्भ किया है, इस वर्ष यह शिविर ११-१२-१३ फरवरी १९९१ को सम्पन्न हो रहा है, जिसमें भाग लेने के लिए पूरे भारतवर्ष के साधक व्यग्र हैं, उतावले हैं, उत्सुक हैं, और इन साधकों का इतना अधिक दबाव है, कि हमें यह शिविर नेपाल की

राजधानी काठमाण्डू में रहने के लिए विकल्प होता पड़ा है, शिविर शुल्क वहां के आयोजकों के अनुसार ६६०)रु० है, जो नेपाल जाकर वहां के आयोजकों के पास जमा कराने आवश्यक है।

यात्रा-पथ

नेपाल जाने के कई रास्ते हैं,

१- दिल्ली से और पटना से सीधा हवाई मार्ग से काठमाण्डू पहुँचा जा सकता है।

२- दिल्ली से लखनऊ, गोरखपुर होते हुए नेपाल की सीमा भैरहवा तक बस से जा सकते हैं, और भैरहवा से कई बसें काठमाण्डू तक पहुँचती हैं।

३- दिल्ली से लखनऊ-गोरखपुर ट्रेन से जा सकते हैं और गोरखपुर से सुनौली, भैरहवा बस से जाकर वहां से काठमाण्डू तक बस से यात्रा कर सकते हैं।

४- बम्बई से गोरखपुर जाने के लिए सीधी ट्रेन० एक्सप्रेस है।

५- कलकत्ता से दार्जिलिंग होते हुए नेपाल पहुँचा जा सकता है, इसी प्रकार आसाम से आने वाले सिलीगुड़ी ट्रेन से चल कर नेपाल बार्डर तक जाकर काकरभीटा स्थान से सीधे काठमाण्डू बस मिलती है।

विशेष व्यवस्था

साधकों के अत्यधिक आग्रह और उनके उत्साह को देखते हुए, उनकी सुविधा के लिए ७-२-९१ को दिल्ली बिड़ला मन्दिर से सिद्धाश्रम साधक परिवार की बसों की व्यवस्था की गई है, जो दिल्ली से आगरा का ताजमहल, चित्रकूट में स्नान, इलाहाबाद का संगम स्नान तथा गोरखपुर में गोरखनाथ के दर्शन कर रक्सौल होते हुए काठमाण्डू तक जाएंगी, हमने २५ बसों की व्यवस्था की है, फिर भी लोगों का आग्रह बढ़ता ही जा रहा है, इसलिए आप अग्रिम सूचना जोधपुर भिजवा कर अपना आरक्षण करवा सकते हैं, बसों का शुल्क दिल्ली में ही दे दें, अग्रिम भेजने की जरूरत नहीं है एक यात्री का जाने आने का किराया ३०००)रु० होगा, इसमें आने और जाने का किराया शामिल है, भोजन आदि की व्यवस्था साधक अपनी तरफ से करेंगे, ये बसें ७-२-९१ से रवाना होंगी और १४-२-९१ को वापिस दिल्ली पहुँचेंगी।

नेपाल जाने के लिए पासपोर्ट आदि की जरूरत नहीं होती, यदि आपके पास स्थानीय मजिस्ट्रेट से लिया हुआ यह प्रमाण पत्र आपकी जेब में हो, कि आप भारतीय नागरिक हैं, तो ज्यादा सुविधाजनक रहता है, यद्यपि इसकी कोई विशेष आवश्यकता नहीं होती।

वास्तव में ही पशुपतिनाथ की यात्रा जीवन की सौभाग्यशाली यात्रा है, जिसका सौभाग्य उदित होता है, वह व्यक्ति ही अपने जीवन में परिवार के साथ इस यात्रा को सम्पन्न कर सकता है।

सम्पर्क

श्री कमल कुमार अधिकारी, ओरपाटी वेसिनाउ वडा नं.-६, पोस्ट बाक्स नं. - ३१८८ काठमाण्डू
श्री अशोक गोयल ९६/२७, ओ० ब्लाइट० प्रेसीडेंट इस्टेट, नई दिल्ली
श्री आर० एन० दुबे, प्रकाश भवन, बी० ११० राजाजीपुरम कालोनी, लखनऊ - २२६०१७
श्री आनन्द मूर्ति मिश्र, २४ अध्यापक आवास भवन, काशी विद्यापीठ, वाराणसी (उ०प्र०)
श्रीमती सरला पढ़िया / विष्णु विजय लाज रानाडे रोड, दादर प० बम्बई फोन - ६४११२३३
श्रीमती जयश्री दाई लामा, मखुबहाल चावेल, फोन - ४७०६२३ काठमाण्डू
श्रीमती नीलम पाण्डेय, फोन - ४११७४५ काठमाण्डू
श्री एम० बी० चतुर्वेदी, जेल ट्रेनिंग सेंटर (इन्स्पेक्टर), जबलपुर (म० प्र०)
श्री महेन्द्र गुप्ता, नजदीक बस स्टैण्ड, टैगोर गार्डन, जिला - यमुनानगर (हरियाणा)
श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा / श्री गिरिजा शंकर शर्मा, श्री नारायण निवास, घर नं. २१-२-४३२,
चारकमान मिट्टी का शेर, हैदराबाद - ५००००२
श्री ज्वाला प्रसाद वर्मा, ठाकुर नविन ... मोहल्ला - नयाटोला पक्काटोली, मुजफ्फरपुर (बिहार)